DIGANTAR

Education for Justice and Equality

वार्षिक प्रतिवेदन

2021-22

www.digantar.org

दिगन्तर

वार्षिक प्रतिवेदन : 2021–22

लेखन

हेमन्त शर्मा

कम्पोजिंग

राजू गुर्जर

कम्प्यूटर ले–आऊट

ख्यालीराम स्वामी

निर्देशन

रीना दास

© दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति, जयपुर

संपर्क
दिगन्तर
शिक्षा एवं खेलकूद समिति
टोडी रमजानीपुरा, खोह नागोरियान रोड
जगतपुरा, जयपुर–302017 राजस्थान

वार्षिक रिपोर्ट
(2021—22)

दिगन्तर
शिक्षा एवं खेलकूद समिति

अनुक्रम

क्रम	गतिविधि	पृष्ठ
1.	पृष्ठभूमि	08
2.	हमारा शैक्षिक दर्शन	10
3.	दिगन्तर विद्यालय	12
3.1	विद्यालय संचालन की विशेषताएं	14
3.1.1	साफ–सफाई	14
3.1.2	बाल सभा	15
3.1.3	शिक्षण व्यवस्था	15
3.1.4	विद्यालय में समय विभाजन	15
3.1.5	विद्यालय व समूहों में अनुशासन	16
3.1.6	दण्ड या भय का कोई स्थान नहीं	16
3.1.7	शिक्षक व बच्चों का रिश्ता	17
3.1.8	शाला एवं समुदाय के बीच रिश्ता	17
3.1.9	विद्यालय में गणवेश नहीं	17
3.1.10	विद्यालय में बच्चों व शिक्षकों का विवरण	18
3.2	विद्यालय गतिविधियां	19
3.2.1	शैक्षिक गतिविधि : ऑनलाइन शिक्षण	19
3.2.2	शैक्षिक गतिविधि : ऑफलाइन शिक्षण	21
3.2.3	कम्प्यूटर शिक्षण	22
3.2.4	कारपेन्ट्री शिक्षण	23
3.2.5	पुस्तकालय शिक्षण	23
3.2.6	विद्यालय में विभिन्न बैठकें	23
3.2.7	कार्यक्रम समन्वय बैठक	24
3.2.8	शेयरिंग बैठकें	25
3.2.9	व्यवस्थागत समीक्षा बैठकें	26
3.2.10	अकादमिक कार्यशालाएं	27
3.2.11	ग्रीष्मकालीन क्षमतावर्धन कार्यशाला	27
3.2.12	शीतकालीन क्षमतावर्धन कार्यशाला	29
3.2.13	अंग्रेजी शिक्षण कोर्स	29

3.2.14	हिन्दी भाषा पढ़ना–लिखना कोर्स	29
3.2.15	राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर संवाद	29
3.2.16	बच्चों की शैक्षिक प्रगति रपट	29
3.2.17	समूदाय के साथ संवाद	30
3.2.18	कोरोना वैक्सीनेशन कैम्प का आयोजन	30
3.2.19	नये कार्मिकों का साक्षात्कार एवं चयन	31
3.2.20	बच्चों की पत्रिका बातूनी	31
3.2.21	अन्य पत्रिकाओं में बच्चों का प्रकाशन	32
3.2.22	राष्ट्रीय पर्व एवं उत्सव	33
3.2.23	बच्चों का विदाई समारोह	34
3.2.24	सामुहिक गोठ	34
3.2.25	अन्य संस्थाओं के साथ संवाद	34
3.2.26	फण्ड रेजिंग हेतु प्रयास	37
3.2.27	ऑनलाइन दस्तावेजीकरण	37
3.2.28	उपलब्धियां	38
3.2.29	चुनौतियां एवं समस्याएं	39
3.2.30	विद्यालय की आगामी योजना व लक्ष्य	39
4. संदर्भ सहायता इकाई		**40**
4.1	लेखा एवं वित्तीय प्रबंधन	40
4.2	स्टोर प्रबंधन	41
4.3	पुस्तकालय संचालन	41
4.4	कैम्पस सुरक्षा व मैस	41
4.5	समस्याएं और चुनौतियां	42
5. The Academic Resource Unit (TARU)		43
5.1	**Training Programs**	**43**
5.1.1	Foundations of Education Course (English)	43
5.1.2	Padhna-Likhna Course	44
5.1.3	Foundations of Education (Hindi) Course	46
5.1.4	Bedrock Series	46
5.1.5	Thinking about Education (TAE) Course	47

5.2	**Development of New Training Courses**	**49**
5.2.1	Certificate Course on Early Mathematics Teaching	49
5.2.2	Certificate Course on Education Work	49
5.2.3	Publication of Bi-monthly Magazine Shiksha Vimarsh	50
5.3	**Interventional Programs**	**50**
5.3.1	Digantar-ITfC Joint Pilot Project on Foundational Literacy and Numeracy	50
5.3.2	Fundraising Efforts	51
5.3.3	Other Engagements	51
6.	**पृष्ठभूमि – शिक्षा विमर्श**	**55**
6.1	पत्रिका की पहुँच और फोकस	56
6.2	प्रसार और सदस्यता	56
6.3	विशेषांक का प्रकाशन	57
6.4	अतिरिक्त कार्य	58
6.5	शिक्षा विमर्श की चुनौतियां	59
7.	**वित्तीय बैलेंसशीट**	–

पृष्ठभूमि

दिगन्तर शब्द का अर्थ है दिक + अंतर या दिशा + परिवर्तन यानी धारणा/दिशा में परिवर्तन को दर्शाना है।

दिगन्तर को शुरुआत में एक स्थानीय व्यवसायिक (अनोखी प्राइवेट लिमिटेड के जॉन और फेथ सिंह) दंपति द्वारा निजी तौर पर वित्तपोषित किया गया था, जो तात्कालीन शैक्षिक परिदृश्य से बहुत संतुष्ट नहीं थे और अपने बच्चों के लिए शिक्षा के प्रति अधिक ''वास्तविक'' दृष्टिकोण चाहते थे। वे एक ऐसा स्कूल चाहते थे, जहाँ बच्चे अपनी गति से सीख सकें और शिक्षा का अर्थ शिक्षा का सही अर्थों में होना हो, न केवल एक प्रक्रिया जिसे जीवन में कुछ डिग्री प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

इस दंपति को कर्नाटक के नीलबाग गांव में एक अनोखा स्कूल मिला, जिसे ब्रिटिश शिक्षाविद् डेविड ऑसबरा चलाते थे। डेविड द्वारा संचालित नीलबाग स्कूल बिल्कुल वैसा ही था जैसा कि इस दंपति को कुछ छोटे बदलाव के अलावा तलाश थी। डेविड ने दंपति से कहा कि यदि वे स्थानीय स्तर पर स्कूल शुरू करना चाहते हैं तो वे उनके शिक्षकों को प्रशिक्षित कर सकते हैं। इस प्रकार दिगन्तर की कल्पना की गई थी। दिगन्तर का नाम इसके दो शिक्षकों, प्रोफेसर रोहित धनकर और रीना दास द्वारा गढ़ा गया था, जिन्होंने डेविड ऑसबरा से प्रशिक्षण लिया और वैकल्पिक शिक्षा के लिए इस विद्यालय की शुरुआत की। लगभग एक दशक तक इस स्कूल ने दंपत्ति और डेविड द्वारा प्रदान की गई वित्तीय/शैक्षिक सहायता की मदद से काम किया। तब तक इस स्कूल में विभिन्न आयु वर्ग के लगभग 24 बच्चे अध्ययनरत थे।

प्रोफेसर रोहित धनकर और रीना दास

इस एक दशक के दौरान शिक्षकों को प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांतों और व्यावहारिक पहलुओं को समझने और अध्ययन करने का पर्याप्त अवसर मिला। उन्होंने स्कूल में काम करने के साथ–साथ शिक्षा का अर्थ और समाज में इसकी प्रासंगिकता को समझने का काफी प्रयास किया। इस प्रयास में कई लोगों और संगठनों के साथ उनका संवाद शुरू हुआ जो शिक्षा के क्षेत्र में भी काम कर रहे थे। इस प्रकार धीरे–धीरे स्कूल के संस्थापक विचारों में शामिल होकर प्राथमिक शिक्षा के लिए और अधिक स्वस्थ दृष्टिकोण ने आकार लेना शुरू कर दिया था।

सन् 1986 में दिगन्तर ने वित्तपोषण के लिए किसी व्यक्ति या परिवार पर निर्भर होने के बजाय इस स्कूल को चलाने वाले एक स्वतंत्र संगठन की आवश्यकता महसूस की गई और स्कूल को ग्रामीण क्षेत्र में चलाने का निर्णय लिया गया ताकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित बच्चों को इसका लाभ मिल सके। व्यापक विचार–विमर्श के बाद दिगन्तर ने एक संगठन का रूप ले लिया और सन् 1987 में राजस्थान सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 के अंतर्गत एक गैर लाभकारी स्वयंसेवी संस्था ''दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति'' के नाम से पंजीकृत करवाया गया। इसके बाद जयपुर के दक्षिण–पूर्वी कोने में गांवों और ढाणियों को अपने शैक्षिक कामकाज के क्षेत्र यानी कर्म भूमि के रूप में चुना गया और इसके व्यवस्थित संचालन के लिए वर्तमान दिगन्तर का मुख्य परिसर श्री जॉन सिंह द्वारा दान में दिया गया।

वर्तमान में दिगन्तर द्वारा जयुपर के भावगढ़ बंध्या और खो–रैबारियन गांव स्थित दो स्कूल संचालित हैं। दिगन्तर के पास एक मजबूत और अनुभवी अकादमिक टीम भी है, इसका कार्य क्षेत्र काफी विशाल रहा है जिसमें कई मौलिक मुद्दों, अकादमिक शोध, शिक्षक प्रशिक्षण, अकादमिक कार्यशालाएं, शिक्षण सामग्री विकसित करना आदि शामिल रहे हैं। वर्तमान में दिगन्तर विद्यालय, शिक्षा विमर्श और अकादमिक संदर्भ इकाई दिगन्तर की तीन परियोजनाएं संचालित हैं जो शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर काम कर रही हैं।

संस्था के तौर पर दिगन्तर के मुख्य उद्देश्य

- ✓ शैक्षिक चिंतन एवं शैक्षिक विचारों को व्यवहारिक धरातल पर परखना।
- ✓ उपयुक्त शिक्षण विधियों और शिक्षण सामग्री का विकास करना।
- ✓ शिक्षा से संबंधित शोध कार्यों को प्रोत्साहन देना।
- ✓ शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों तथा संस्थाओं को शैक्षिक मदद मुहैया कराना।
- ✓ सांस्कृतिक उन्नयन तथा सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करना।

हमारा शैक्षिक दर्शन

दिगन्तर का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य तर्कसंगत स्वायत्तता, संवेदनशीलता, लोकतांत्रिक और समतावादी मूल्यों, श्रम की गरिमा व कौशलों का विकास करना होना चाहिए। हमारा मानना है कि प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को स्वप्रेरित और स्वतंत्र शिक्षार्थी बनाना है। क्योंकि प्रत्येक मानव बच्चा समाज में रहना सीखने, जीवन के लिए अपने लक्ष्यों को परिभाषित करने, चुने हुए लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके खोजने, उचित कार्य करने और किए गए कार्यों के लिए जिम्मेदार होने में सक्षम है। एक लोकतांत्रिक समाज में प्रत्येक मनुष्य को अपने लिए निर्णय लेने का अधिकार है और वह अपने निर्णयों के लिए जिम्मेदार होने के लिए बाध्य है। जब कोई समाज समानता की इस बुनियादी धारणा को नकारता है तो उस समाज में शोषण तथा उत्पीड़न अलग–अलग तरीकों से स्वीकार्य हो जाते हैं। और ऐसे समाज में सामुहिक सहयोग के लाभों का बंटवारा और सामाजिक वस्तुओं के वितरण के तंत्र पर नियंत्रण कुछेक के पक्ष में झुक जाता है। इसलिए समाज के प्रत्येक सदस्य की तर्कसंगत स्वायत्तता का विकास शायद न्याय सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा तरीका है। लोगों को स्वायत्त और विवेकवान बनने में मदद करने के लिए अच्छी शिक्षा ही एक मात्र रास्ता है।

दिगन्तर का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य तर्कसंगत स्वायत्तता, संवेदनशीलता, लोकतांत्रिक और समतावादी मूल्यों, श्रम की गरिमा व कौशलों का विकास करना होना चाहिए। इस विचार के साथ प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को स्वप्रेरित और स्वतंत्र शिक्षार्थी बनाना है।

दुनिया के सभी जीवों के प्रति संवेदनशीलता हमारे विवेकसंगत स्वायत्तता का एक अभिन्न हिस्सा है। जिस प्रकार मानव जीवन समाज में ही संभव है। इसी तरह जीवन में जटिल व पारस्परिक विभिन्न रूपों को बनाए रखना केवल इंसानी जीवन में ही सम्भव है। ऐसे में मनुष्य के लिए सभी प्राणियों के प्रति संवेदनशील और सम्मानजनक होने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है। सभी प्राणियों व पौधों के लिए संवेदनशीलता तथा सम्मान मानव जीवन में समृद्धि और भावनात्मक गहराई आपस में जुड़े हुए हैं। इसलिए संवेदनशीलता को शिक्षा के उद्धेश्यों के रूप में शामिल करना महत्वपूर्ण हैं।

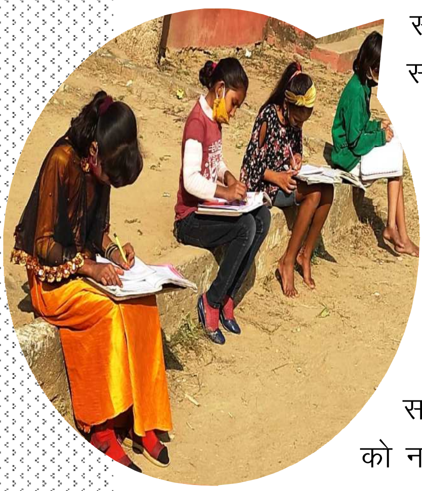

समानता पर आधारित कोई भी समाज जो अपने बारे में सोच सके, निर्णय ले सके और अपनी बेहतरी के लिए आपसी समझ बना सके, एक–दूसरे के प्रति सम्मान और विचारों का आदान–प्रदान कर सके ऐसे लोकतांत्रिक समाज के नागरिकों में निरन्तर संवाद की आवश्यकता होती है। अतः बिना शर्त सभी के लिए समान भागीदारी और निष्पक्ष व विवेकसंगत बातचीत की प्रतिबद्धता शायद सबसे महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक मूल्य है। किसी भी विवेकसंगत बातचीत में निर्णय लेने के लिए साझा मापदण्ड की जरूरत होती है और इन मापदण्डों व क्षमताओं को नागरिकों में विकसित करने का एकमात्र साधन शिक्षा ही है।

जैसा कि हम जानते है कि कुछ सामाजिक व सांस्कृतिक सम्पदा मानव जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं, जिसके उत्पादन के लिए मेहनत और कौशल की आवश्यकता होती है। हम में से हर एक को इस उत्पादन में योगदान कर पाने में सक्षम होना चाहिए। वर्तमान समाज में आवश्यक कौशलों की जटिलता के लिए किसी दृष्टांत की जरूरत नहीं है। इसलिए, शिक्षा में विभिन्न कौशलों के विकास और उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की अनदेखी नहीं की जा सकती।

इन विचारों के आधार पर सभी बच्चों के लिए शैक्षिक अवसर विकसित करने के लिए दिगन्तर प्रयासरत है, और कुछ हद तक दिगन्तर को इनमें सफलता भी मिली है।

हम एक ऐसे बहुलवादी व लोकतांत्रिक समाज की कल्पना करते हैं जो सभी लोगों के लिए न्याय, समानता, स्वतंत्रता और मानव गरिमा का रक्षक हो। दिगन्तर शिक्षा के माध्यम से, वैचारिक स्वायत्तता तथा विचारों को कर्म में परिणित करने का साहस प्रदान करता है, इसी सपने को पूरा करने में अपना योगदान करता है।

दिगन्तर विद्यालय

किसी भी विद्यालय का संचालन एवं संचालन की व्यवस्थाएं इस बात पर निर्भर करती हैं कि विद्यालय के स्वरूप को लेकर हमारी धारणा क्या है। एक विद्यालय को कैसा होना चाहिए, इसके बारे में हमारी सोच क्या है ?

दूसरी बात किसी भी विद्यालय का स्वरूप कैसा होगा ? यह मुख्य रूप से दो बातों पर निर्भर करता है, पहला ''हम कैसा समाज चाहते हैं'' या ''किस तरह के समाज की कल्पना हमारे मन में है।'' दूसरा शिक्षा, ज्ञान व सीखने को लेकर हमारी क्या मान्यताएं और समझ है।

दिगन्तर की शिक्षा के प्रति संकल्पना

स्कूल ऐसा होना चाहिए जहाँ बच्चे अपने को सहज व सुरक्षित महसूस करें। जहाँ उनके व्यक्तित्व का सम्मान किया जाता हो। सीख सकें और सीखने में रुचि लें। जहाँ बच्चों को सिखाने के लिए किसी भी प्रकार का दण्ड या दबाव नहीं दिया जाता हो।

दिगन्तर शुरू से ही ऐसे लोकतांत्रिक समाज की कल्पना करता रहा, जिसमें सभी को न्याय, समता, स्वतंत्रता व मानवीय गरिमा प्राप्त हो। समाज की इस प्रकार की संकल्पना को पूरा करने के लिए ऐसे नागरिक की जरूरत है जो कि विवेकशील, चिंतनशील और दूसरे मानवों के प्रति संवेदनशील हो। स्वयं अपने विवेक से निर्णय ले सके और सबके प्रति उसमें सम्मान हो।

इस प्रकार के नागरिक को तैयार करने में स्कूल की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः स्कूल ऐसा होना चाहिए जहाँ बच्चे अपने को सहज व सुरक्षित महसूस करें। जहाँ उनके व्यक्तित्व का सम्मान किया जाता हो। बच्चे सीख सकें और सीखने में रुचि लें। शाला में बच्चों को सिखाने के लिए किसी भी प्रकार का दण्ड या दबाव नहीं दिया जाता हो। स्कूल का व्यवहार लोकतांत्रिक हो।

इस प्रकार का माहौल दिगन्तर विद्यालयों की महत्वपूर्ण विशेषता है जो इसे अन्य विद्यालयों से अलग करता है। इस प्रकार के माहौल को तैयार करने के लिए दिगन्तर विद्यालय में निम्न गतिविधियां की जाती रही हैं।

वर्तमान में दिगन्तर के दो विद्यालय जयपुर शहर के नजदीक ग्रामीण इलाकों खो–रैबारियान (खोनागोरियान) तथा भावगढ़ बंध्या गाँवों में संचालित हैं, जिनमें तीन–सौ से अधिक बच्चे अध्ययन कर रहे हैं।

विद्यालय संचालन की विशेषताएं

दिगन्तर के विद्यालयों का संचालन शिक्षकों, समन्वयकों एवं निदेशक के द्वारा मिलझुल कर होता है। सभी शिक्षक व समन्वयक अपने अनुभवों, साथी शिक्षकों के परामर्शों, समुदाय व बच्चों के साथ बने रिश्तों के सहयोग से विद्यालय का संचालन करते हैं।

दैनिक क्रिया–कलाप

3.1.1 साफ–सफाई : दिगन्तर विद्यालयों की शुरुआत साफ–सफाई से होती है। सभी शिक्षक व बच्चे मिलकर अपने विद्यालय की सफाई करते हैं। समूह कक्ष व शाला प्रांगण की सफाई के साथ–साथ शौचालयों की सफाई भी शिक्षक व बच्चें ही करते हैं। साल में दो बार एक सफाई चार्ट बनाया जाता है, जिसमें सफाई का स्थान और सभी की जिम्मेदारी तय की जाती है। यह चार्ट बच्चों के साथ मिलकर तैयार किया जाता है। सफाई के लिए विद्यालय में प्रतिदिन 15 मिनट का समय निर्धारित होता है।

> **इंसान के रूप में हम सब एक हैं। प्राकृतिक रूप से हमारे अंदर किसी प्रकार का ऐसा कोई भेद भी नहीं है जो हमें छोटा या बडा बनाये।**

इस सफाई व्यवस्था के पीछे का उद्देश्य यह है कि दिगन्तर में सफाई को एक मूल्य के रूप में देखा जाता है। क्योंकि इंसान जिस स्थान या वस्तु का उपयोग करते हैं उसकी सुरक्षा और सफाई की जिम्मेदारी भी उपयोगकर्ता की होनी चाहिए। दूसरी बात यह है कि समाज में कर्मों के आधार फैली विषमताओं के कारण इंसान में छोटा या बड़ा देखने का जो आधार व्याप्त है, यह एकदम गलत और हमारे संविधान की मूल भावना के विरुद्ध भी है। इंसान के रूप में हम सब एक हैं। प्राकृतिक रूप से हमारे अंदर किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं है जो हमें छोटा या बड़ा बनाये। चूंकि दिगन्तर का लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास के साथ–साथ संविधान में भी आस्था और विश्वास है। अतः विद्यालय में नियमित रूप से की जाने वाली साफ–सफाई की यह गतिविधि बच्चों को शुरुआत से ही सामाजिक भेदभाव जैसी विषमताओं से दूर रखने में मदद करती है।

3.1.2 बाल सभा : सफाई के बाद विद्यालय में समूह स्तर पर 35 मिनिट की बाल सभा होती है। इसमें गीत कविताएं, एकाभिनय, नाटक, विभिन्न मुद्दों पर चर्चा, खेल आदि गतिविधि की जाती हैं। जिससे बच्चों में कला अभिव्यक्तियों के विकास के साथ आपस में मिलकर सीखने में मदद करती हैं। इस बाल सभा में शिक्षक व बच्चे एक–दूसरे की समस्याएं सुनते हैं, मिलकर निराकरण करते हैं

और जो निर्णय बच्चों को न्याय संगत नहीं लगते उन पर बातचीत करते हैं, बातचीत के बाद भी यदि जरूरत हो तो उन्हें आम सभा में ले जाते हैं। यह प्रक्रिया बच्चों को लोकतांत्रिक प्रणाली से परिचय कराती है। समूह बाल सभा के बाद 10 मिनट का अवकाश और फिर शिक्षण कार्य आरम्भ होता है।

3.1.3 शिक्षण व्यवस्था : दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों को स्तरानुसार शिक्षण कराया जाता है (Vertical

age and levat) अतः स्कूल में बच्चे कक्षाओं की जगह समूहों में अध्ययन करते हैं। इसके पीछे मान्यता यह है कि सभी बच्चों की सीखने की अपनी–अपनी गति होती है। यानी एक ही समय में सभी समान रूप से सीख जाये, यह जरूरी नहीं है अतः बच्चों को सीखने की गति की पूरी स्वतंत्रता हो। दिगन्तर विद्यालय के एक समूह में विभिन्न शैक्षिक स्तर वाले 30 बच्चे होते हैं तथा सभी बच्चे अपनी–अपनी गति से सीख रहे होते हैं। इन समूहों में शिक्षक निरन्तर छः घंटे तक शिक्षण कार्य करते हैं। जो विषय पढ़ाये जाते हैं, उसमें प्राथमिक स्तर पर हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, पर्यावरण अध्ययन, हस्तकार्य, कारपेन्ट्री और कम्प्यूटर हैं और उच्च प्राथमिक से माध्यमिक तक हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू के अलावा गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, कम्प्यूटर व कारपेन्ट्री का अध्ययन भी करवाया जाता है।

3.1.4 विद्यालय में समय विभाजन : दिगन्तर विद्यालयों में सप्ताह में 6 दिन शिक्षण कार्य होता है, जिसमें सोमवार से शुक्रवार तक का समय विभाजन एक–सा ही है लेकिन शनिवार का दिन विशेष होता है। सोमवार से शुक्रवार तक शिक्षक बच्चों के साथ 6 घण्टे काम करते हैं और उसके बाद दो घण्टे किये गये कार्य को जांचना, रिकार्ड रखना व अगले दिन की योजना तैयार करते हैं। इसके अलावा महीने में एक बार समूह शिक्षक प्रत्येक बच्चे के घर जाकर फीडबैक भी लेता है।

लेकिन शनिवार को शिक्षक बच्चों के साथ मात्र 3 घण्टे ही काम करते हैं, शुरुआत में साफ–सफाई के बाद विद्यालय के सभी बच्चे एक साथ सामुहिक बाल सभा करते हैं, जिसमें बाल पंचायत के सामने समूह स्तर की बाल सभाओं से आये मुद्दों पर चर्चा करके सामुहिक निर्णय लिया जाता है।

इन तीन घण्टों में भी विशेष तरह की गतिविधियां करवाई जाती हैं, जैसे समूह को व्यस्थित करना, सौंदर्यकरण करना, फटी किताब–कापियों की सिलाई करना व कवर चढ़ाना, चित्रों को फाईल करना, तात्कालिक घटनाओं पर चर्चा करना, खेल–खेलना इत्यादि। बाकी के समय में शिक्षक अपनी आगामी शिक्षण की तैयारी व शैक्षिक बैठकें करते हैं।

3.1.5 विद्यालय व समूहों में अनुशासन : अध्ययन–अध्यापन के लिए एक खास प्रकार के अनुशासन की आवश्यकता होती है। परम्परागत तौर पर देखने में आया है कि विद्यालयों में अनुशासन को बनाये रखने की जिम्मेदारी शिक्षक की मानी जाती है और जब शिक्षक व्यस्त होते हैं तो वह अपनी जिम्मेदारी किसी विद्यार्थी को मोनिटर के रूप में दे देते हैं। ऐसे अनुशासन में कुछ लोगों के नियम दूसरों पर थोपे जाते हैं और जिन पर यह नियम लागू होते हैं, उनको नियमों से कोई लेना देना नहीं होता। इस प्रकार के अनुशासन में भय, दण्ड व पुरस्कारों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, जिसके कारण बच्चों में स्वतंत्र चेतना व स्वायत्तता की भावना का विकास नहीं हो पाता है।

दिगन्तर विद्यालयों में शिक्षक व बच्चे दोनों मिलकर अपनी शाला व समूह के लिए नियम बनाते हैं। जिससे बच्चों में स्वनुशासन की भावना विकसित होती है। इस प्रकार बने नियम लचीले होते हैं। यदि किसी बच्चे से नियम टूट जाता है तो उसके साथ संवेदनशीलता से बात की जाती है। समूह में पुराने नियमों में संशोधन भी करते रहते हैं, जिसमें सभी सदस्यों की भागीदारी होती है। इस प्रकार के स्वनुशासन से बच्चे आगे चल कर एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होते हैं।

3.1.6 दण्ड या भय का कोई स्थान नहीं : दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों को किसी भी प्रकार का मानसिक व शारीरिक दण्ड नहीं दिया जाता है। बच्चों को बेझिझक अपनी बात कहने की आजादी है। बच्चे, साथी बच्चों एवं शिक्षक दोनों के कामों पर टिप्पणी कर सकते हैं। उन पर किसी भी प्रकार का दबाव व भय नहीं होता है। दिगन्तर का मानना है कि किसी भी प्रकार का दण्ड या भय बच्चों की

सीखने में कोई मदद नहीं करता है बल्कि दण्ड या भय का माहौल बच्चों की जिज्ञासाओं, सृजनशीलता, कल्पनाशीलता के विकास में बाधक ही होता है। भय से बच्चों में स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं और बच्चे कुठिंत हो जाते हैं।

3.1.7 शिक्षक–बच्चों का रिश्ता : दिगन्तर में शिक्षा के उद्देश्यों में इस बात पर जोर देते हैं कि हम शिक्षा से एक स्वतंत्र रूप से सोचने वाला, समझकर सीखने एवं विवेकसंगत निर्णय लेने वाला इंसान तैयार करेंगे। इस प्रकार का इंसान तभी संभव है जब विद्यालय में ऐसा माहौल हो जहां पर बच्चे अपने चिंतन एवं विचारों को खुलकर अभिव्यक्त कर सकें। अपनी बात, परेशानियों एवं मतभेदों को बिना डरे बेझिझक व्यक्त कर सकें। इस प्रकार का माहौल तभी संभव है जब शिक्षक एवं बच्चों के बीच आत्मीयता का रिश्ता हो। दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों एवं शिक्षक के बीच आत्मीयता का रिश्ता होता है। बच्चे अपनी सभी समस्याओं को शिक्षक के साथ शेयर करते हैं। आपस में एक दूसरे पर भरोसा करते हैं। बच्चों को यदि शिक्षक द्वारा समझाया समझ में नहीं आता है तो वे बिना हिचकिचाहट के अपनी बात कहते हैं।

3.1.8 शाला एवं समुदाय के बीच रिश्ता : हमारी मान्यता है कि विद्यालय लोकतांत्रिक समाज का

ही हिस्सा होता है। अतः विद्यालय की तमाम गतिविधियों के बारे में समुदाय को भी पता होना चाहिए, ताकि समुदाय और विद्यालय दोनों के बीच प्रगाढ़ रिश्ता व पारदर्शिता बनी रहे। दिगन्तर विद्यालयों का समुदाय के साथ निरन्तर संपर्क बना रहता है। इसके लिए शिक्षक बच्चों के माता–पिता से माह में एक बार जरूर मिलते हैं। सतत संवाद कायम रखने के लिए अलग–अलग स्तर पर बैठकें की जाती हैं। शाला स्तर पर होने वाली गतिविधियों में समुदाय के लोगों को भी आमंत्रित किया जाता है एवं इसमें आये सुझाव एवं टिप्पणियों पर विचार किया जाता है। शाला के सदस्य समुदाय के सुख–दुख में शामिल होते हैं। इसके अलावा समुदाय की शैक्षणिक गतिविधियों में भी मदद ली जाती है एवं समय–समय पर शिक्षकों द्वारा सामाजिक मुद्दों पर समुदाय में नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किये जाते हैं।

3.1.9 विद्यालय में गणवेश नहीं : हर विद्यालय की अपनी गणवेश होती है। लेकिन दिगन्तर विद्यालय में कोई गणवेश नहीं। बच्चा अपनी इच्छा से किसी भी रंग के कपड़े पहनकर आ सकता जो भी उसके पास उपलब्ध हैं। इसके पीछे हमारा मानना है कि विद्यालय में गणवेश बच्चों के सीखने में कोई मदद नहीं करती है। दूसरी तरफ जो लोग गणवेश रखते हैं उनका मानना है कि इससे समानता आती है। लेकिन समान गणवेश होने के बावजूद भी बच्चों के खान–पान व रहन–सहन में कहीं समानता नहीं दिखती है। और जब तक विचारों में बदलाव नहीं होगा तब तक समान गणवेश से समानता नहीं आ सकती है।

3.1.10 विद्यालय में बच्चे व शिक्षकों का विवरण : वर्तमान में दिगन्तर विद्यालयों (भावगढ़ बंध्या व खो रैबारियान) में अध्ययनरत बच्चों एवं शिक्षकों का विवरण विस्तार से नीचे दिया गया है।

- दिगन्तर विद्यालयों में 5 शिक्षक प्राथमिक में, 2 शिक्षक उच्च प्राथमिक से माध्यमिक में, 1 शिक्षक कारपेन्ट्री में, 1 कम्प्यूटर शिक्षक, 2 समन्वयक, 2 चौकीदार, 1 कैम्पस प्रभारी और 1 पुस्तकालय प्रभारी को मिलाकर कुल 15 कार्मिक कार्यरत हैं।
- विद्यालयों में कुल 221 (181 भावगढ बंध्या में और 40 खो–रैबारियान में) बच्चे अध्ययनरत हैं।
- प्राथमिक स्तर के 130 बच्चे, उच्च प्राथमिक के 45 और माध्यमिक स्तर के 46 बच्चे अध्ययनरत हैं।
- इस सत्र कुल 20 बच्चे 5वीं की परीक्षा में, 15 आठवीं तथा 25 दसवीं की परीक्षा में बैठ रहे है।

दिगन्तर विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों का वर्तमान में विवरण इस प्रकार है –

<table>
<tr><th>क्र.सं.</th><th>समूह</th><th>स्तर</th><th>शिक्षक</th><th>लड़के</th><th>लड़कियां</th><th>कुल बच्चे</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>तितली</td><td rowspan="2">पूर्व प्राथमिक</td><td>रेखा</td><td>16</td><td>14</td><td>30</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>चंदा</td><td>मंजू सिंह</td><td>12</td><td>12</td><td>24</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>आँगन</td><td rowspan="3">प्राथमिक</td><td>घनश्याम</td><td>14</td><td>16</td><td>30</td></tr>
<tr><td>4.</td><td>सावन</td><td>रामजीलाल</td><td>13</td><td>17</td><td>30</td></tr>
<tr><td>5.</td><td>महल</td><td>विवेक सिंह</td><td>05</td><td>11</td><td>16</td></tr>
<tr><td>6.</td><td>रोशनी</td><td rowspan="3">उच्च प्राथमिक</td><td rowspan="2">गुणमाला</td><td>08</td><td>06</td><td>14</td></tr>
<tr><td>7.</td><td>महक</td><td>05</td><td>11</td><td>16</td></tr>
<tr><td>8.</td><td>अमन</td><td>मधु</td><td>05</td><td>10</td><td>15</td></tr>
<tr><td>9.</td><td>मेहंदी</td><td rowspan="2">माध्यमिक</td><td>गुणमाला</td><td>05</td><td>16</td><td>21</td></tr>
<tr><td>10.</td><td>चाँदनी</td><td>मधू</td><td>07</td><td>18</td><td>25</td></tr>
<tr><td colspan="4">कुल</td><td>91</td><td>132</td><td>221</td></tr>
</table>

विद्यालय गतिविधियां

कोविड–19 महामारी के कारण गत दो सालों से दिगन्तर विद्यालय में बच्चों का शिक्षण कार्य विधिवत रूप से संचालित नहीं हो पाया। यही दशा इस सत्र 2021–22 में रही। प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए फरवरी माह के अन्त में विद्यालय खुला यानी लगभग डेढ़ माह ही संचालित हो पाया। इस प्रकार बहुत कम समय के लिए बीच–बीच में उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के समूह भी सरकार की गाइडलाइन के अनुसार खोले गये। यदि स्कूल आकर बच्चों के अध्ययन की बात करें तो इस सत्र में बच्चों का स्तरानुसार स्कूल आने का विवरण इस प्रकार रहा है।

प्राथमिक स्तर : 45 दिन उच्च प्राथमिक स्तर : 55 दिन माध्यमिक स्तर : 65 दिन

3.2.1 शैक्षिक गतिविधि : ऑनलाइन शिक्षण : कोविड–19 महामारी के कारण गत सत्र में जिन चुनौतियों के साथ हमने ऑनलाइन शिक्षण की शुरुआत की थी, उसके अनुभवों एवं तैयारी को आधार मानकर ही इस सत्र में भी प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए भी ऑनलाइन शिक्षण जारी रखा गया। इस सत्र में ऑनलाइन शिक्षण तो जारी रहा लेकिन अधिकतर समय शिक्षकों ने स्तरानुसार बच्चों को स्कूल से ही ऑनलाइन शिक्षण करवाया। बहुत कम समय रहा, जिसमें शिक्षकों ने अपने घरों से बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण कराया। गत सत्र में ऑनलाइन शिक्षण के दौरान हुये अनुभवों एवं चुनौतियों ने इस सत्र में ऑनलाइन शिक्षण को बेहतर करने में काफी मदद की। इस बार पिछले सत्र की बजाय बच्चे, अभिभावक एवं शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण से सहज दिखे। हालांकि जिस स्तर पर पर बच्चों के साथ काम होना चाहिए था। वह ऑनलाइन में कर पाना सहज नहीं था, लेकिन लगातार प्रयास व आपसी विचार विमर्श से इस प्रकार के शिक्षण की चुनौतियों का एक स्तर तक सामना कर पाये और बच्चों को सीखने–सिखाने में बेहतर मदद कर सके।

इस सत्र में भी ऑनलाइन शिक्षण के दौरान गत सत्र की कई चुनौतियों में से कुछ चुनौतियां बरकार रही। जो इस प्रकार से है।

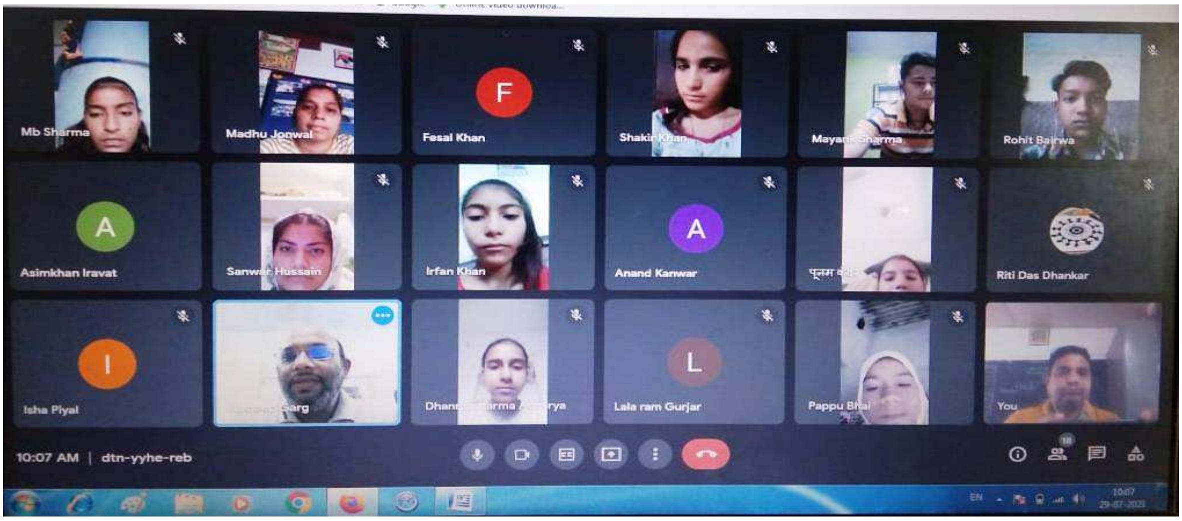

- बच्चों के साथ ऑनलाइन शिक्षण का हमारे लिए अनौखा अनुभव था। शुरुआत में हमें काफी मुश्किलें भी आईं, जिनमें से कुछ अभी भी बरकरार हैं। यदि सबसे प्रमुख समस्या की बात करें तो बच्चे नियमित रूप से शिक्षण कार्य नहीं कर पाये। जिसमें फोन का ना होना या रिचार्ज खत्म होना या घर के किसी सदस्य द्वारा फोन लेकर चले जाना आदि बातें शामिल रहीं।
- इसके अलावा इन दिनों में एक बात जो देखी गई, उसमें प्राथमिक स्तर के बच्चों की यदि बात करें तो वे ऑनलाइन शिक्षण से परेशान होने लग गये थे। उनको यह लगने लगा कि हम कब खेलने जाये, कब अपने स्कूल जाये क्योंकि फोन पर बैठे रहना, अपना ध्यान लगाये रखना उनके लिए बहुत ही मुश्किल होता जा रहा था।
- हालाकि शिक्षकों द्वारा बच्चों के स्तरानुसार व्हाट्सअप पर उपसमूह बनाकर काम किया गया। इन उपसमूहों में बच्चों के साथ सीखने–सिखाने को लेकर चर्चाएं की, जिससे एक–दूसरे की बातों को समझने में काफी मदद मिली।
- शिक्षण के दौरान इंटरनेट की समस्या के कारण शिक्षण कार्य में बाधा भी उत्पन्न हुई।
- कई बार शिक्षण के दौरान उसी फोन पर अभिभावकों के व्यक्तिगत फोन आ जाते थे, जिसके कारण वो बातचीत में व्यस्त हो जाते थे और बच्चों के शिक्षण में काफी व्यवधान हुआ।
- कुछ अभिभावक बच्चे के लिए ऑनलाइन शिक्षण हेतु दिए गये समय पर किसी कारण से फोन नहीं उठा पाते, जिसके कारण बच्चों के शिक्षण में काफी समस्या पैदा हुई।
- कई अभिभावकों से जब बातचीत की जाती थी कि आप बच्चे को फोन पर बैठाओ तो उनका कहना था कि वह कहीं घर से बाहर खेलने गया है। ऑनलाइन पढ़ाई का जैसे ही समय होता है तो बच्चा भाग जाता है, ऐसी स्थिति में समझ नहीं आ रहा था कि हमें क्या करना चाहिए।

उपरोक्त समस्याओं में से अधिकतर पर तो हमने धीरे–धीरे एक स्तर तक पार पा लिया था, लेकिन इंटरनेट की समस्या हमारे हाथ में नहीं होने के कारण अन्त तक लगभग वैसी ही बनी रही।

3.2.2 शैक्षिक गतिविधि : ऑफलाइन शिक्षण :

जनवरी, 2022 में जैसे ही कोविड–19 महामारी के पहले चरण का प्रभाव थोड़ा कम हुआ तो सरकार ने कुछ शर्तों के साथ कक्षा 6 से 10 तक के बच्चों को दो चरणों में विद्यालयों में अध्ययन हेतु आने की अनुमति दी गई, लेकिन इसमें भी अभिभावकों की लिखित अनुमति जरूरी थी।

अतः सरकारी गाइड लाईन के अनुसार समन्वयक समूह ने निदेशक के साथ विचार विमर्श करके स्कूल खोलने की तैयारी शुरू की। जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से निम्न कार्य किये गये।

- सभी समूह कक्षों की साफ–सफाई करवाई गई।
- बच्चों के बैठने के लिए फर्नीचर को कक्षा–कक्षों में दो गज दूरी की पालना पर लगाया गया।
- कोविड–19 सुरक्षा हेतु कक्षों एवं विद्यालय में कई जगह पोस्टर चस्पा किये गये।
- विद्यालय में आने वाले बच्चों व लोगों की प्रतिदिन थर्मल स्कैनिंग की गई।
- बच्चों के नियमित कैम्पस में लगाये गये नये नलों से हाथ धोने के बाद ही स्कूल में बैठने की अनुमति दी गई।
- कोविड–19 के दौरान बच्चों को विद्यालय में आने की अनुमति के लिए सहमति पत्र तैयार कर अभिभावाकों से हस्ताक्षर करवाए गए।

- 18 जनवरी, 2021 से कक्षा 9वीं व 10वीं के बच्चों ने स्कूल आना शुरू किया। जिनका समय सरकारी आदेशानुसार सुबह 09:30 से 12:30 तक का रखा गया। पूर्व तैयारी के अनुसार बच्चों की थर्मल स्कैनिंग करके, साबून से हाथ धोने के बाद मास्क सहित ही विद्यालय में प्रवेश दिया गया। बच्चों की सीट पहले से ही निर्धारित कर दी गई थी। पहले दिन शिक्षकों ने कोविड–19 महामारी

से बचाव को लेकर बच्चों से बातचीत की गई, कि कोई भी बच्चा अपनी सीट को नहीं बदलेगा। किसी भी प्रकार की सामग्री का आदान–प्रदान नहीं किया जाएगा। हमेशा निश्चित दूरी बनाकर बातचीत करेंगे और विद्यालय में पूरे समय मास्क को लगाये रखना है, आदि।

- सरकार ने 8 फरवरी को दूसरे चरण में कक्षा 6वीं से 8वीं तक तथा 17 फरवरी से प्राथमिक के बच्चों को कुछ शर्तों के साथ विद्यालय जाने की अनुमति दी। इस दौरान स्कूल बसों के संचालन की अनुमति नहीं होने के कारण बच्चे अपने स्तर पर स्वयं या अभिभावकों के साथ स्कूल आये। लेकिन हमारे लिए यह समय काफी चुनौतिपूर्ण रहा क्योंकि इससे पहले दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों को हर चीज की स्वतंत्रता होती थी। ऐसे में बच्चों के बीच पूरे समय सामाजिक दूरी बनाये रखते हुए और मास्क के साथ पढ़ाना काफी चुनौतिपूर्ण होने के बावजूद भी हमने पूरी संवेदनशीलता के साथ शिक्षण कार्य आरम्भ किया। लेकिन कुछ ही समय में महामारी का प्रकोप दोबारा से बढ़ने के कारण सरकार ने स्कूलों को बन्द कर दिया तो हमें फिर से ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया को अपनाना पड़ा।

3.2.3 कम्प्यूटर शिक्षण : कोरोना के कारण शुरुआत में बच्चों का ऑफलाइन शिक्षण शुरू हो जाने के बाद भी सुरक्षा की दृष्टि से कम्प्यूटर शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ सीधे तौर पर तो कोई कार्य नहीं करवाया गया। लेकिन बेहतर कम्प्यूटर शिक्षण हेतु जिन क्षमताओं और तकनीक की जरूरत होती है, उनके अनुसार एक व्यवस्थित गतिविधि चार्ट बनाया गया और आगामी सत्र की तैयारी हेतु सभी कम्प्यूटर्स को व्यवस्थित किया गया तथा बच्चों के लिए कार्य योजना तैयार की गई।

3.2.4 कारपेन्ट्री शिक्षण : महामारी के दौरान कारपेन्ट्री शिक्षक भी बच्चों को कोई शिक्षण कार्य नहीं करा पाये। लेकिन स्वयं के क्षमतावर्धन और भविष्य में बच्चों के शिक्षण में उपयोग हेतू इंटरनेट की मदद से कारपेन्ट्री शिक्षक ने बहुत से छोटे और नये मॉडल तैयार किये। यह मॉडल बच्चों के साथ भविष्य में कारपेन्ट्री शिक्षण कार्य करवाने में मददगार रहेंगे।

3.2.5 पुस्तकालय शिक्षण : दिगन्तर विद्यालय में बच्चों के उपयोग के लिए एक पुस्तकालय है, जिसमें वर्तमान में लगभग 30,000 पुस्तकें हैं। शुरुआत से ही बच्चे स्वयं पुस्तकालय से पुस्तकें चुनकर अपने नाम इश्यू करवाकर ले जाते रहे हैं लेकिन कोरोना महामारी के कारण इस सत्र में विद्यालय नहीं खुलने की वजह से बच्चे पुस्तकें इश्यू करवाने से वंचित रहे। इस बार शिक्षकों द्वारा अपने स्तर पर पुस्तकें इश्यू करवाकर, उनमें से बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण के दौरान कहानी सुनाना, कहानियों पर बातचीत करना इत्यादि उपयोग किया गया। बच्चों को कहानी सुनाने के लिये कहानियों का चयन कर उनकी बुकलेट तैयार की गई। इसके अलावा निम्न कार्य पुस्तकालय स्तर पर भी किये गये।

- नवम्बर माह से बच्चों के लिये पुस्तकालय खोला गया। बच्चों को पुस्तकें इश्यू व जमा करने का कार्य किया गया। इस समय केवल कक्षा 6 से 10 के बच्चे विद्यालय आते थे। फरवरी माह में कक्षा 1 से 10 के सभी बच्चों को पुस्तकें इश्यू करने का कार्य किया। इस सत्र में बच्चों को लगभग कुल 1425 पुस्तकें इश्यू करने का कार्य किया गया।
- भौतिक सत्यापन से पूर्व बकाया पुस्तकों की सूची बनाकर सूचना देने का काम किया गया।
- 27 और 29 नवम्बर को डॉ. राधाकृष्णन् राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, राजकीय महाराज सार्वजनिक मण्डल पुस्तकालय, केन्द्रीय पुस्तकालय राजस्थान विश्वविद्यालय, अजीम प्रेमजी संस्थान के पुस्तकालयों का अवलोकन किया गया। इन पुस्तकालय में किये जाने वाले कार्यों और उनके नियमों के बारे में पुस्तकालय प्रभारी के तौर पर जानकारी प्राप्त की गई।
- फरवरी माह में विद्यालय के पुस्तकालय के लिए लगभग 500 पुस्तकें लोकायत प्रकाशन, साहित्यगार प्रकाशन, पारीक प्रकाशन, एकलव्य प्रकाशन आदि से खरीदने का कार्य किया।
- ऑफलाइन शिक्षण के दौरान लगभग 15 दिन बाद पुस्तकालय प्रभारी द्वारा बच्चों को पुस्तकालय के कांलाश में पहले की तरह ही बच्चों को कहानी सुनाई और चर्चा की गई। उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के बच्चे कालांश के दौरान पुस्तकों का चयन कर अध्ययन किया।

3.2.6 विद्यालय में विभिन्न बैठकें : आरंभिक शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नीतियों, शिक्षण व शैक्षिक सिद्धान्तों को दिशा देने में मदद करना दिगन्तर विद्यालय के उद्देश्य में निहित हैं। दिगन्तर विद्यालयों में शुरू से ही कोई प्रधानाध्यापक नहीं होता है और न ही कोई बड़ा समझे जाने वाला व्यक्ति किसी

विद्यालय का निरीक्षण करता है। सभी शिक्षक एक–दूसरे के समकक्ष माने जाते है। इसलिए दिगन्तर विद्यालयों में विभिन्न स्तर पर बैठकें नियोजित की जाती हैं। काम के दौरान आ रही समस्याओं को आपस में बांटने, उसका उचित समाधान खोजने और तार्किकता से सोच–विचार कर अपना काम करने में मदद के लिए विभिन्न बैठकों का प्रावधान रखा गया।

3.2.7 कार्यक्रम समन्वय बैठक : विद्यालय के बेतहर संचालन और समन्वयन के लिए महीने में दो बार (पाक्षिक) बैंठकों का आयोजन किया जाता है। इन बैठकों में अकादमिक व व्यवस्थात्मक इकाई के सभी व्यक्तियों के साथ संस्था निदेशक भी सम्मिलित होती हैं। इन नियमित बैठकों में पिछले 15 दिनों में किये गए कार्यों की समीक्षा की जाती है और आगामी 15 दिनों की कार्य योजना तैयार की जाती है। आगामी योजना में मुख्य रूप से विद्यालय की जरूरतों को चिह्नित करने, विद्यालय के माहौल और गतिविधि कलेण्डर के अनुसार आंकलन कर दिशा तय करने का काम किया जाता रहा है। इन बैठकों को विद्यालय में सामुहिक जिम्मेदारी एवं जवाबदेही की भावना का विकास करने साथ एक–दूसरे से सीखने–सिखाने के अवसर मुहैया कराने करवाने के रूप में देखा जाता है, जिसके कारण यह बैठकें विद्यालय का संचालन सरलता से करने में सहायक रही हैं। इस सत्र के दौरान ऑनलाइन व ऑफलाइन सम्पन्न हुई, इन बैठकों में मुख्य रूप से निम्न मुद्दों पर बातचीत कर निर्णय लिये गये।

- देश में जिस प्रकार से कोरोना के ऑकड़े बढ़ते जा रहे थे तथा राजस्थान में भी स्थिति काफी खराब हो रही थी। अतः इस पर बैठक में विचार कर घर से ही कार्य करना और बच्चों के साथ ऑनलाइन शिक्षण के निर्णय लिए गये।
- बच्चों के ऑनलाइन शिक्षण हेतु शिक्षकों के लिए संसाधनों की व्यवस्था और बेहतर क्रियान्वयन के लिए विचार विमर्श कर योजना को अन्तिम रूप दिया गया।
- स्कूलों में नये प्रवेश, बच्चों की संख्या व आगामी लक्ष्यों पर बातचीत कर निर्णय लिए गए।

- पुस्तकालय व स्टोर के भौतिक सत्यापन की रपट के विश्लेषण पर विचार विमर्श किया गया।
- अन्य संस्थाओं द्वारा आये वित्तीय सहयोग पर नीति बनाई गई और राशि का उपयोग किया गया।
- फण्डरेजिंग की प्रक्रिया व तैयारी पर बातचीत कर उचित निर्णय लिए गये तथा नीति बनाई गई।
- ग्रीष्मकालीन व शीतकालीन शिक्षक क्षमतावर्धन कार्यशाला की योजना व क्रियान्वयन।
- दिगन्तर विद्यालय के आवश्यक बजट एवं वित्तीय स्थिति पर विचार विमर्श किया गया।
- इस सत्र में लॉकडाउन के दौरान बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर विचार विमर्श किया गया।
- सरकारी पोर्टल पर विद्यालय के दस्तावेजों को अपलोड करने पर बातचीत करना।
- अंग्रेजी, गणित व उर्दू शिक्षक के विज्ञापन तैयार करना और विज्ञापन देने का निर्णय लिया गया।
- कचहरेवाला राजकीय प्राथमिक स्कूल प्रोजेक्ट के बजट व प्रपोजल के संदर्भ में Abercrombie & Kent Philanthropy के साथ निरन्तर संवाद चलते रहे हैं। अन्त में बजट पर सहमति के बाद प्रपोजल भेज दिया गया तथा एक स्तर पर प्रोजेक्ट पर कार्य करने की सहमति बन पाई।
- ऑफलाइन शिक्षण के दौरान इस सत्र में बसों का संचालन बन्द रहा अतः दिगन्तर विद्यालय में जो बच्चे पैदल आते हैं उनके लिए एक छोटा रास्ता है जो नाले के पास स्थित प्लॉट में होकर जाता है। प्लॉट की बाउण्ड्री वॉल ऊँची है अतः बच्चों के लिए स्कूल के पीछे के गेट के पास एक अस्थाई सीढी बनवाकर लगवाने पर विस्तार से बातचीत हुई।
- विद्यालय की दोनों बसों की वर्तमान कीमत पता करने के लिए कम्पनी में बातचीत की गई।
- ITFC के नये पॉयलेट प्रोजैक्ट के संदर्भ में नियमित रूप से बातचीत कर निर्णय लिए गये।
- संस्था के बेहतर संचालन हेतु समयानुसार बैठकों का आयोजन किया जाना है अतः इसके लिए बैठकों की सूची बनाई गई एवं उनकी आगामी समयअवधि तय की गई।
- एकीकृत मान्यता मॉडयूल प्राप्त करने के संदर्भ में विस्तार से बातचीत कर संबन्धित दस्तावेज जमा करवाने पर विचार विमर्श किया गया।

3.2.8 शेयरिंग बैठकें : दिगन्तर शिक्षकों द्वारा अपने काम की प्रगति, कठिनाईयों और आगामी कार्य योजना हेतु प्रत्येक सप्ताह एक बैठक की जाती है, जिसको शेयरिंग बैठक कहते हैं। इस बैठक में सभी शिक्षक व समन्वयक शामिल होते हैं। यह बैठकें प्राथमिक समूह तक के शिक्षकों की अलग और उच्च प्राथमिक से माध्यमिक समूह तक के शिक्षकों की अलग होती रही हैं। लेकिन इस सत्र में लॉकडाउन की वजह से शिक्षकों ने शेयरिंग बैठकें ऑनलाइन ही आयोजित की, जिनमें प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक के सभी शिक्षक और समन्वयक शामिल रहे। इन बैठकों में मुख्य रूप से शिक्षण कार्य के दौरान आई समस्याओं पर विचार–विमर्श किया जाता है और सभी मिलकर समस्याओं का

समाधान खोजते हैं। इस प्रकार इन बैठकों में एक–दूसरे को समझने, आपसी संवाद को बढ़ावा देने, पारदर्शिता बनाये रखने और अपने काम को निखारने में सब के लिए उपयोगी होती हैं। पिछले सत्रों के अनुपात में इस बार बहुत ही कम शेयरिंग बैठकें हुई। इन बैठकों में बातचीत के मुद्दे इस प्रकार रहे।

- शेयरिंग बैठकों में ऑनलाइन शिक्षण ले रहे बच्चों की उपस्थिति को समूह के समक्ष रखकर उन पर बातचीत की गई और जो बच्चे ऑनलाइन शिक्षण नहीं ले पा रहे हैं, उनके कारणों को जानना व उनको भी कैसे शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ा जाये इस पर बातचीत की गई।
- बोर्ड परीक्षा देने वाले बच्चों की मॉडल पेपर्स द्वारा तैयारी करवाने पर विचार विमर्श किया गया।
- इस बार डोर टू डोर समुदाय संपर्क कम हुआ लेकिन फोन के जरिये अभिभावकों से नियमित रूप से जुड़े रहे, इससे अभिभावकों की स्थिति को महसूस किया गया और बच्चों के दिनभर के क्रियाकलापों को समझा गया। इससे ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्था में काफी मदद मिली।
- ऑनलाइन शिक्षण में और क्या बेहतर किया जा सकता है, इस पर नियमित रूप से हर बैठक में बातचीत और अनुभव के आधार पर अच्छा करने का मिलकर प्रयास किया गया।
- कोविड–19 के बाद विद्यालयों में बच्चों की कम भागीदारी से लगता है कि महामारी ने परिवारों के साथ बच्चों को भी प्रभावित किया, जिसके कारण बच्चों में शिक्षण के प्रति अरुचि दिखाई दी।
- दृश्य चित्रों पर बच्चों के साथ कार्य का तरीका एवं उद्देश्य को समझा गया।
- इबारती सवालों पर बच्चों के साथ कार्य की प्रक्रिया को समझना एवं स्तरानुसार कैसे काम किया जाये, इस पर नियमित विचार विमर्श किया गया।
- 'चकमक' पत्रिका में आये सवालों पर बच्चों के साथ काम करके समझ बनाई गई।
- गणित की विभिन्न अवधारणाओं पर कार्य का प्रस्तुतिकरण व उस पर नियमित बातचीत।
- बच्चों के सभी विषयों के शिक्षण का विश्लेषण किया, शिक्षण में आ रही समस्याओं पर विचार विमर्श कर उनका समाधान खोजा गया। जैसे किसी बच्चे को पढ़ना–लिखना सीखने में समस्या आ रही थी, तो उनकी समस्याओं को चिन्हित कर योजना बनाई गई व क्रियान्वयन किया गया।

3.2.9 व्यवस्थागत समीक्षा बैठकें : दिगन्तर विद्यालयों में व्यवस्था के सुचारू संचालन में मदद हेतु एक टीम है। यह टीम विद्यालय की व्यवस्थाओं में मदद करती है। यह टीम हर सप्ताह व्यवस्थागत कार्यों की समीक्षा हेतु एक बैठक करती है। जिसमें मुद्दे इस प्रकार होते हैं –

- दिगन्तर विद्यालय के कैम्पस में लगभग 500 छोटे–बड़े पुराने पेड़–पौधे हैं। जिनकी सिचाईं व सुरक्षा को लेकर निमित समीक्षा होती है। इस साल भी कुल 9 नये पौधे (5 गिलोय, 2 चम्पा व 2 अन्य) लगाये गये हैं। ये सभी पौधे अभी तक ठीक तरह से प्रगति कर रहे हैं।

- विद्यालय कैम्पस की सुरक्षा की मुख्य जिम्मेदारी चौकीदारों की होती है अतः सुरक्षा और रात्री ड्यूटी को लेकर नियमित समीक्षा भी इसी मीटिंग में की गई है।
- विद्यालय में सामग्री के रख–रखाव, स्टेशनरी स्टोर से संबंधित निर्णय, सामग्री का आदान–प्रदान और शिक्षकों व बच्चों के उपयोग हेतु आवश्यक सामग्री बाजार से खरीद कर उपलब्ध करवाना आदि मुद्दों पर नियमित रूप से विचार विमर्श किया गया व निर्णय लिए गये।
- पुस्तकालय कार्य की प्रगति, भौतिक सत्यापन योजना और क्रियान्वयन की समीक्षा की गई।
- विद्यालय कैम्पस में बिजली व प्लम्बिंग संबंधी साप्ताहिक कार्य करने वाले व्यक्तियों से समन्वयन कर प्रत्येक सप्ताह आवश्यक रिपेरिंग और नये कार्य करवाए गये।
- विद्यालय कैम्पस की नियमित रूप से साफ–सफाई का ध्यान रखने का कार्य किया गया।
- स्कूल बसों की देख–रेख, रिपेरिंग एवं आवश्यक दस्तावेजों को नियमानुसार अपडेट रखना।
- विद्यालय में पीने के साफ पानी की व्यवस्था हेतु जिम्मेदार व्यक्ति से नियमित बातचीत करना।

3.2.10 अकादमिक कार्यशालाएं : दिगन्तर का मानना है कि शिक्षक विद्यालय से संबंधित शैक्षिक निर्णय लेने में सक्षम और आत्मनिर्भर होने चाहिए। इसके अलावा शिक्षा के सभी पहलुओं पर अच्छी समझ रखने के साथ उसके कर्म और विचार से भी शिक्षक स्वायत्त हो। इस विचार के अनुसार दिगन्तर विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की अकादमिक कार्यशालाओं और प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। दिगन्तर में शिक्षकों को क्षमतावर्द्धन के लिए चार माह का सेवापूर्व प्रशिक्षण तो दिया जाता है परन्तु यह पर्याप्त नहीं होता है। क्योंकि सतत रूप से बच्चों के साथ शैक्षिक काम करते हुए शिक्षकों के सामने अनेक ऐसे अकादमिक मुद्दे आते हैं जिन पर उन्हें लम्बी चर्चा करने, शिक्षण सामग्री बनाने या किसी विषय के क्षेत्र में समझ बनाने की आवश्यकता होती है। अतः इन्हीं को ध्यान में रखते हुए दिगन्तर शिक्षकों के लिए प्रत्येक वर्ष सेवा के दौरान भी दो (ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन) कार्यशालाएं होती हैं और समय–समय पर कुछ ऑनलाइन कार्यशालाओं में भी शिक्षक शामिल होते रहे हैं, जिनका विस्तार से विवरण इस प्रकार से है।

3.2.11 ग्रीष्मकालीन क्षमतावर्धन कार्यशाला : दिगन्तर शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकालीन क्षमतावर्धन कार्यशाला के संदर्भ में निदेशक व समन्वयक समूह ने एक ऑनलाइन बैठक कर इसकी रूपरेखा पर विचार विमर्श किया एवं इसके आधार पर कार्यशाला में मुख्य रूप से दो कार्य किये गये जो इस प्रकार से रहे।

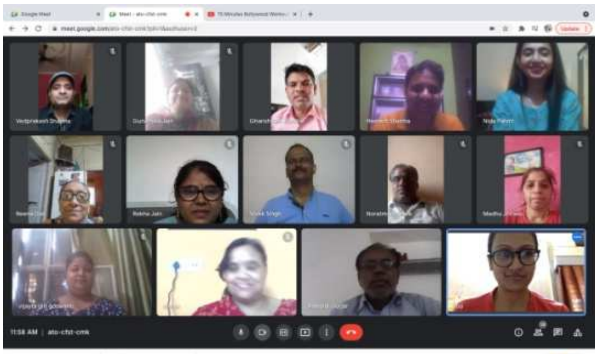

- ✓ इस सत्र में 17 मई से कार्यशाला को कोविड–19 महामारी के कारण ऑनलाइन करना तय किया गया। क्योंकि राजस्थान सरकार द्वारा लॉकडाउन घोषित किया हुआ था, जिसके कारण स्कूलें बन्द थीं। अतः राजस्थान सरकार की गाइड लाइन की पालना में शिक्षक अपने घरों से ही कार्यशाला में जुड़े। कार्यशाला में मुख्य रूप से निम्न बिन्दुओं पर कार्य किया गया –

- राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल की पुस्तकों का अध्ययन–अध्यापन की दृष्टि से अध्ययन करना और पाठ दर पाठ उन पर काम करते हुए समझ विकसित की गई।

- कार्यशाला में बच्चों के लिए कहानियां, कविताएं एवं नाटक सृजित किये गये। सृजित रचनाओं पर बच्चों के साथ बेहतर उपयोग लेने के लिए चित्र भी बनाये गए।

- शिक्षकों को पेपर फोल्डिंग से संबंधित विभिन्न प्रकार के मॉडल बनाना सिखाया गया। इसके लिए पूर्व में पुस्तकालय से इश्यु की गई पुस्तकें व अन्य ऑनलाइन विडियो की मदद से मॉडल बनाये व जिनको समूह में प्रस्तुत किये।

- कार्यशाला में शैक्षिक व सामाजिक दृष्टि के महत्वपूर्ण लेखों को पढ़कर उन पर चर्चा की गई। इसमें प्रोफेसर रोहित धनकर का लेख ''**मजहब का अपमान बनाम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, हरिशंकर परसाई के व्यंग्य टिगूं की क्या गलती थी ?**'' एवं गीजू भाई के ''**बाल वाचन**'' लेख को पढ़कर चर्चा की गई।

- 'थप्पड़' व 'मदारी' दोनों फिल्मों को देखा गया एवं इन पर विस्तृत चर्चा की गई।

- अंग्रेजी में कहानियों पर काम कैसे करें, इसकी तैयारी एवं प्रस्तुतिकरण पर कार्य किया।

- ऑनलाइन शिक्षण की समस्याओं पर बातचीत और समाधान खोजने के प्रयास किये गए।

- शिक्षकों ने बच्चों के ऑनलाइन शिक्षण के दौरान हुये अनुभवों, चुनौतियों एवं समस्या समाधान हेतु किये गये उपायों पर अपने–अपने अनुभव लिखे गये।

- इस सत्र में कार्यशाला में बाहर के दो संदर्भ व्यक्ति जुड़े, जिसमें श्रीमान अक्षत जी जो कि एक फिल्म निर्माता हैं और सामाजिक उधमी के रूप में काम कर रहे हैं। इन्होंने ''**बॉलीवुड के अपने अनुभव, हम अपने–आपको स्वस्थ्य कैसे रखें, इसकी जरूरत और योग का हमारे जीवन में महत्व पर एक सत्र में चर्चा की।**

- दूसरे व्यक्ति के तौर पर सुश्री गौरी द्वारा फैशन को लेकर एक सत्र लिया, जिसमें इन्होंने हमें **फैशन क्या है ? इसका सामाजिक प्रभाव क्या रहता है ? यह किस प्रकार से चलन में आता है** आदि पर बातचीत कर इनके द्वारा हमें एक नई दिशा देने का प्रयास किया गया।

- कम्यूनिकेशन समन्वयक सुश्री ऋतिदास धनकर ने ''**एपैडमिक क्या और इसका मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव**'' विषय पर बेहतर चर्चा करते हुये एक समझ बनाने का प्रयास किया।

- दिगन्तर के तरू कार्यक्रम से कुलदीप जी द्वारा शिक्षक का ''**लेखन कैसा हो यानी एक शिक्षक को किस प्रकार से लिखना चाहिए**'' इस विषय पर एक सत्र का आयोजन किया गया।

- हर कार्यशाला के अन्त में जूमएप पर एक डान्स सत्र का भी आयोजन किया, जिसने संभागियों के दिनभर की मानसिक थकान दूर करने में काफी मदद की।

- कार्यशाला में शिक्षकों ने शिक्षा पर आधारित पुस्तकों का अध्ययन करके प्रस्तुतिकरण भी दिया।

3.2.12 शीतकालीन क्षमतावर्द्धन कार्यशाला

- ✓ शीतकालीन अवकाश के दौरान शिक्षकों ने बच्चों की प्रगति रपट लिखने का काम किया। इस बार 31 दिसम्बर, 2021 को एक दिवसीय कार्यशाला की गई। इस कार्यशाला में ऑनलाइन इंन्टरर्नशिप हेतु तैयार की गई सामग्री को प्रस्तुत किया गया एवं इस पर बातचीत की गई। पूर्व में सभी ने इसका एक स्वरूप तैयार कर लिया था। अब केवल सुझावों पर बातचीत की गई। जिसमें सभी ने व्यक्तिगत स्तर पर मिले सुझावों के अनुसार कार्य किया।
  - इसके अलावा शिक्षकों को ऑनलाईन शिक्षण में आ रही तमाम समस्याओं पर बातचीत कर उनका समाधान खोजा गया।

3.2.13 अंग्रेजी शिक्षण कोर्स : 3 जुलाई, 2021 से TARU द्वारा आयोजित English Language Teaching कोर्स में सभी शिक्षक व समन्वयक शामिल रहे और लाभान्वित हुये।

3.2.14 हिन्दी भाषा पढ़ना लिखना कोर्स : 18 जुलाई, 2021 में TARU द्वारा शिक्षा में कार्यरत लोगों के लिए पढ़ना–लिखना कोर्स शुरू किया, जो दिगन्तर की पैडागोजी पर आधारित था। इसमें सभी शिक्षकों ने भागीदारी करके अपनी समझ को और बेहतर किया।

3.2.15 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर संवाद : 12 जनवरी, 2022 को दिगन्तर के सचिव प्रोफेसर रोहित धनकर जी के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर एक ऑनलाइन संवाद हुआ। इस तीन घण्टे के संवाद में दिगन्तर से निदेशक, सहायक निदेशक, समन्वयक समूह व सभी शिक्षक शामिल रहे। संवाद के दौरान प्रोफेसर धनकर ने दिगन्तर शिक्षकों की ओर से नई शिक्षा नीति पर आये सवालों पर विस्तार से बातचीत कर समझ बनाई गई।

3.2.16 बच्चों की शैक्षिक प्रगति रपट : दिगन्तर विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा प्रत्येक 6 माह या वर्ष में दो बार बच्चों की समग्र प्रगति का आंकलन कर रपट तैयार की जाती है। जिसमें विषयवार शैक्षिक समझ के अतिरिक्त बच्चे की रुचि, जिज्ञासा, समय का पालन, साथियों के प्रति संवेदनशीलता, विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना, विद्यालय तथा परिवार में व्यवहार इत्यादि का उल्लेख होता है। चूंकि इस सत्र में बच्चों के साथ अधिकतर ऑनलाइन कार्य ही हुआ। इसलिए शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षण के

दौरान से ही बच्चों के सीखने का निरन्तर जो अंकन किया, उसके आधार पर प्रगति रिपोर्ट लिखी गई हैं। यह रपट बच्चे के व्यक्तित्व को दर्शाती है। यह रिपोर्ट बच्चों के साथ भविष्य में काम करने में महत्त्वपूर्ण होती है। इससे बच्चे की रुचि, जिज्ञासा, व्यवहार और अकादमिक समझ को ध्यान में रखकर हमें आगे की दिशा तय करने में काफी मदद मिलती है।

3.2.17 समूदाय के साथ संवाद : दिगन्तर शुरुआत से ही समुदाय के साथ मिलकर विद्यालय संचालित कर रहा है, सामुदायिक बैठकों में विद्यालय की प्रगति और समस्याएं शेयर की जाती हैं और उनका समाधान भी किया जाता है। वर्तमान में दिगन्तर विद्यालयों में आस–पास की लगभग 25 ढ़ाणियों और राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड की इन्दिरा गांधी नगर आवासीय योजना से बच्चे आते हैं। दिगन्तर विद्यालय के शिक्षक हर माह अपने समूह के बच्चों के घर जाकर अभिभावकों से उनकी प्रगति, परिवार व विद्यालय संबंधी बातचीत करते हैं। दिगन्तर विद्यालय में समय–समय पर अभिभावक एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य भी विद्यालय अवलोकन में बच्चों से बातचीत करते रहे हैं। लेकिन इस सत्र में फरवरी के बाद कोरोना की रफ़्तार कम होने पर विद्यालय के बच्चों और वैक्सीनेशन की जागरूकता हेतु शिक्षकों का समुदाय में जाना हो पाया। इसके अलावा कोरोना काल में टेलीफोन पर ही अभिभावकों से संवाद करने की कोशिश की गई। इस सत्र के अन्त में फरवरी–मार्च में शिक्षकों ने समुदाय में संपर्क कर बच्चों की ऑनलाइन कक्षा व शिक्षण सामग्री के संदर्भ में बातचीत की।

दिगन्तर द्वारा कोरोना बचाव एवं वैक्सीन की जागरूकता हेतु समुदाय में संपर्क किया गया, जिसके आधार पर विद्यालय में एक वैक्सीन कैम्प का भी आयोजन हुआ। वैक्सीन हेतु 16 सितम्बर तक चार समूहों द्वारा किये गये समुदाय संपर्क में कुल 457 लोगों से बातचीत हुई, जिसमें 232 लोगों ने वैक्सीन लगवाई और 225 लोगों ने अभी तक वैक्सीन नहीं लगवाई थी यानी 50 प्रतिशत लोग बिना वैक्सीन के थे। बातचीत से लोगों में वैक्सीन के प्रति रूझान भी बढ़ा है और कैम्प में आकर वैक्सीन लगवाई गई।

3.2.18 कोरोना वैक्सीनेशन कैम्प का आयोजन : समुदाय संपर्क और वैक्सीन की स्थिति के विश्लेषण के बाद देखा गया कि समुदाय में 50 प्रतिशत लोगों ने वैक्सीन नहीं लगवाई है अतः

23 नवम्बर, 2021 को दिगन्तर विद्यालय में कोरोना वैक्सीनेशन कैम्प का आयोजन किया गया। इस कैम्प के लिए शिक्षकों ने समुदाय में संपर्क किया, पम्पलेट बांटे और बातचीत कर वैक्सीन हेतु प्रेरित किया गया। इसके अलवा समुदाय के लोगों से फोन पर भी सम्पर्क बनाये रखा, वैक्सीन कैम्प के आयोजन में वैक्सीन पहुंचाने और राजकीय अस्पताल खोनागोरियान से अनुमति लेने आदि का काम अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा किया गया। इसके अलवा अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन की ओर से आये दो लोगों ने कैम्प की पूरी प्रक्रिया में सहयोग के कारण वैक्सीनेशन कैम्प सफलता पूर्वक सम्पन्न हो पाया। कैम्प में कुल 167 लोगों को टीके लगे, जिसमें 90 लोगों को दूसरी डोज और 77 लोगों को प्रथम डोज कोविशिल्ड वैक्सीन की लगवाई गई।

3.2.19 नये कार्मिकों का साक्षात्कार एवं चयन : दिगन्तर में नये कार्मिकों के चयन की एक प्रक्रिया है। जिसके अन्तर्गत आवश्यक कार्मिकों के लिए समाचार पत्रों में विज्ञप्ति प्रकाशित की जाती है। विज्ञप्ति के बाद प्राप्त आवेदनों की योग्यतानुसार छंटनी के बाद साक्षात्कार में शामिल होने हेतु आमंत्रण पत्र भेजे जाते हैं। साक्षात्कार प्रक्रिया में लिखित कार्य, समूह चर्चा और व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर चयनबोर्ड द्वारा उपयुक्त कार्मिकों का प्रशिक्षण/प्रोबेशन के लिए चयन करता है।

- ✓ 6 अगस्त व 27 दिसम्बर, 2021 को अंग्रेजी शिक्षक हेतु साक्षात्कार लिया गया लेकिन अंग्रेजी का उपयुक्त शिक्षक नहीं मिल पाया। इसकी समस्या अभी भी बरकरार है।
- ✓ 2 अक्टूबर, 2021 को चौकीदार का साक्षात्कार किया, जिसमें आये व्यक्ति को विद्यालय के कार्य की रूपरेखा से अवगत करवाया गया और उनसे विस्तार से बातचीत बाद उसका चयन किया गया।
- ✓ बीच सत्र में गणित के शिक्षक के छोड़कर चले जाने के बाद 7 जनवरी, 2022 को गणित शिक्षक का साक्षात्कार लिया गया। कुल 6 लोगों को बुलाया गया था, लेकिन एक ही व्यक्ति साक्षात्कार हेतु आया। साक्षात्कार में निदेशक, सहायक निदेशक व समन्वयक समूह शामिल रहे। साक्षात्कार की पूरी प्रक्रिया के बाद भी गणित शिक्षक का चयन नहीं हो पाया।

3.2.20 बच्चों की पत्रिका बातूनी : दिगन्तर विद्यालयों में विगत 20 वर्षों से बच्चों के लिए, बच्चों द्वारा निर्मित एक द्विमासिक पत्रिका ''बातूनी'' का प्रकाशन किया जा रहा है। बातूनी में बच्चों द्वारा सृजित कहानियां, कविताएं, पहेलियां, बच्चों की बातचीत के अंश, बच्चों के अनुभव और अपनी बात आदि को स्थान दिया जाता है। चूंकि दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों को पढ़ने–लिखने के साथ कला और

सृजनात्मक कार्य के लिए भी पर्याप्त अवसर मिलता है। इसलिए बच्चों द्वारा किये गये विशेष कार्यों को आपस में सांझा करने, उन पर चर्चाएं करने, सुझाव व समीक्षाओं के लिए उनकी रचनाओं को बातूनी में प्रकाशित किया जाता है और विद्यालय में प्रदर्शित भी किया जाता है। ताकि बच्चों का लेखन व रचनाओं के बारे में अधिक से अधिक संवाद हो पाए और उसके माध्यम से बच्चों की कल्पना, लेखन की रचनात्मकता में निखार को बढ़ावा मिले। इसी उद्देश्य हेतु बातूनी का प्रकाशन किया जाता है। यह शैक्षिक सत्र ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनो ही तरह से चला। अतः इस सत्र में बातूनी के तीन 124, 125 और 126 अंक ही प्रकाशित कर पाये। यह तीनों ही अंक सामग्री के अभाव में त्रमासिक प्रकाशित हो पाये। जिसमें बच्चों ने कहानियां, कविताएं, पहेलिया व कोरोना काल के अपने अनुभवों को साझा किया है।

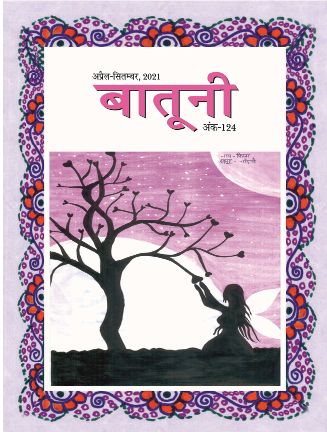

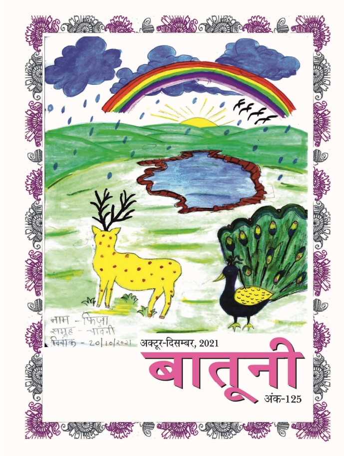

3.2.21 अन्य पत्रिकाओं में बच्चों का प्रकाशन :

एकलव्य द्वारा प्रकाशित चकमक के नवम्बर, 2021 के अंक में दिगन्तर विद्यालय के 5 बच्चों की रचनाएं प्रकाशित हुई, जिसमें चकमक द्वारा पूछे गये कुछ सवालों के जवाब थे एवं एक व्यक्ति का साक्षात्कार भी उसमें शामिल था। इन सभी पांचों बच्चों को एकलव्य सस्था की ओर से चकमक पत्रिका भेजी गई।

हमारे घर पर साड़ियों पर मोती लगाने का काम किया जाता है। इस काम को करने में मुझे बहुत ही ज़ोर आता है। शुरुआत में तो मुझे बहुत मज़ा आता था। लेकिन अब यह रोज़ का ही काम हो गया तो मुझे ज़ोर आने लगा। एक दिन मेरी मम्मी ने कहा कि यह साड़ी थोड़ा जल्दी-से देना है तो तुम सब मिलकर इस साड़ी के मोती लगवा दो। मुझे उस दिन बहुत ही ज़ोर आ रहा था तो मैंने पानी पीने का बहाना बनाया और पानी पीने के बजाय मैं चाचा के घर पर जाकर टीवी देखने लग गई। इस प्रकार मैंने साड़ी के मोती लगाने से अपने आप को बचाया।

सोफिया, मेंहदी समूह, दिगन्तर विद्यालय, जयपुर, राजस्थान

16 चकमक नवम्बर 2021 मेरा पन्ना

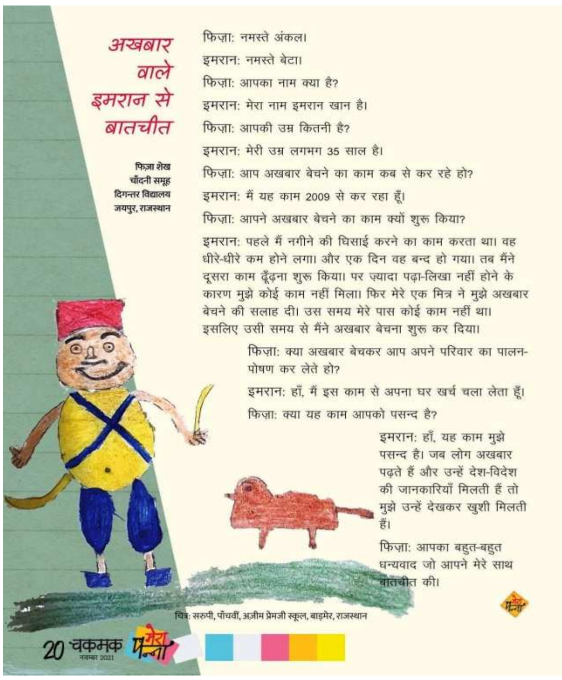

अखबार वाले इमरान से बातचीत

फिज़ा शेख
चाँदनी समूह
दिगन्तर विद्यालय
जयपुर, राजस्थान

फिज़ा: नमस्ते अंकल।
इमरान: नमस्ते बेटा।
फिज़ा: आपका नाम क्या है?
इमरान: मेरा नाम इमरान खान है।
फिज़ा: आपकी उम्र कितनी है?
इमरान: मेरी उम्र लगभग 35 साल है।
फिज़ा: आप अखबार बेचने का काम कब से कर रहे हो?
इमरान: मैं यह काम 2009 से कर रहा हूँ।
फिज़ा: आपने अखबार बेचने का काम क्यों शुरू किया?
इमरान: पहले मैं नगीने की घिसाई करने का काम करता था। वह धीरे-धीरे कम होने लगा। और एक दिन वह बन्द हो गया। तब मैंने दूसरा काम ढूँढ़ना शुरू किया। पर ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं होने के कारण मुझे कोई काम नहीं मिला। फिर मेरे एक मित्र ने मुझे अखबार बेचने की सलाह दी। उस समय मेरे पास कोई काम नहीं था। इसलिए उसी समय से मैंने अखबार बेचना शुरू कर दिया।
फिज़ा: क्या अखबार बेचकर आप अपने परिवार का पालन-पोषण कर लेते हो?
इमरान: हाँ, मैं इस काम से अपना घर खर्च चला लेता हूँ।
फिज़ा: क्या यह काम आपको पसन्द है?
इमरान: हाँ, यह काम मुझे पसन्द है। जब लोग अखबार पढ़ते हैं और उन्हें देश-विदेश की जानकारियाँ मिलती हैं तो मुझे उन्हें देखकर खुशी मिलती हैं।
फिज़ा: आपका बहुत-बहुत धन्यवाद जो आपने मेरे साथ बातचीत की।

चित्र: सरुपी, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

20 चकमक नवम्बर 2021 मेरा पन्ना

जब हमारे अपने ही हमें डराएँ...

बचपन में हम सब को बड़ों ने कभी ना कभी डराया है। डराने के तरीके और कारण अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन मोटे तौर पर हमें डराने का कारण होता है कि हम बस उनका कहा मान लें। इस अंक के लिए हमने तुमसे ऐसी ही कुछ बातें लिख भेजने को कहा था। बड़ी संख्या में बच्चों से इसके लिए जवाब मिले। कुछ जवाब तुम इन पन्नों में पढ़ सकते हो...

मैं जब छोटा था तो ज़िद करने पर मेरी मम्मी कहती थीं, "देख, काली रात है। अगर तू रोएगा तो तेरी आवाज़ सुनकर भूत आ जाएगा और तुझे उठाकर ले जाएगा।" मैं डरकर चुप हो जाता था। लेकिन अब अगर ज़िद करता हूँ तो माँ भूत को नहीं बुलातीं, बल्कि वह खुद डायरेक्ट ही चप्पल उठाकर मारती हैं।

सूफियान, रोशनी समूह, दिगन्तर, जयपुर, राजस्थान

28 चकमक नवम्बर 2021 मेरा पन्ना

जब मैं छोटी थी तो मेरे बड़े भाई इमरान का दोस्त बिट्टू मुझे कीड़ों से डराता था। वह अपने हाथ पर अल्लाह घोड़ा टिड्डा रखकर मुझे दिखलाता और मेरे पीछे दौड़ता और कहता था कि टिड्डा, टिड्डा रयाना ने खाजा। मैं बुरी तरह डर जाती थी और बिट्टू खूब हँसता था।

रयाना, महल समूह, दिगन्तर, जयपुर, राजस्थान

जब मैं छोटा था तब मेरा भाई मुझे यह कहकर डराता था कि तू मेरा यह काम कर दे, नहीं तो मैं तेरे पीछे कुत्ते लगा दूँगा। मैं कुत्ते से बुरी तरह डरता हूँ।

सचिन, मेंहदी समूह, दिगन्तर विद्यालय, जयपुर, राजस्थान

32 चकमक नवम्बर 2021 मेरा पन्ना

3.2.22 राष्ट्रीय पर्व एवं उत्सव : दिगन्तर विद्यालय में राष्ट्रीय पर्वों को पूरे उत्साह और तैयारी के साथ मनाया जाता है। जिनमें पर्वों को मनाने के कारणों और जरूरत को ध्यान में रखते हुए बच्चों व शिक्षकों द्वारा पूरी तैयारी के साथ कार्यक्रम किये जाते रहे हैं, जिससे बच्चों को पर्व का महत्व समझने, आजादी के मायने तथा संविधान को समझने में मदद करते हैं। कोरोना के कारण बच्चे स्कूल नहीं आ रहे थे, जिससे राष्ट्रीय पर्वों को मनाने का जो आनन्द था, वह कम रहा यानी इन पर्वों को बच्चों के साथ मनाने की एक अलग ही बात होती है। फिर भी आजादी की 75वीं वर्षगांठ को दिगन्तर की पूरी टीम ने ही खुशी व नई उर्जा के साथ मनाया गया। इस दिन दिगन्तर परिवार के सभी सदस्यों ने मिलकर एक गीत ''**हम लोग है ऐसे दीवाने दुनिया को बदल कर मानेंगे**'' प्रस्तुत किया। **गणतंत्र दिवस पर भी** दिगन्तर विद्यालय के सभी शिक्षकों एवं समन्वयक समूह द्वारा एक गीत प्रस्तुत किया गया। गीत के बोल थे ''**तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशा**''। इसके अलावा सभी ने मिलकर तिरंगा झण्डा फहराया और उसके सम्मान में राष्ट्रगान का गान किया गया।

3.2.23 बच्चों का विदाई समारोह : 12 मार्च, 2022 को दिगन्तर विद्यालय भावगढ में माध्यमिक स्तर में परीक्षा दे रहे चांदनी समूह के बच्चों की विदाई का कार्यक्रम किया। इसमें 9वीं कक्षा स्तर के बच्चे व सभी शिक्षक समन्वयक शामिल रहे। बच्चों ने अपने स्कूली अनुभवों को एक कार्ड में लिखकर दिया। इस दिन बच्चों की मांग पर कुछ शिक्षकों ने कविताएं भी प्रस्तुत की। सभी ने मिलकर खाना बनाया और भोजन किया। जिन बच्चों का यह अन्तिम साल था, उन्होंने स्कूल छोड़ने का दुःख जताया। उनकी यही मांग थी कि हमारे इस विद्यायल को 12वीं तक का करो, जिससे की हमें इसे छोड़ना ना पड़े।

3.2.24 सामूहिक गोठ : कोविड पाबंदियों के बाद दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ में पहली बार 30 अक्टूबर, 2021 को सभी मिलकर एक सामूहिक गोठ का आयोजन किया। जिसमें मिलकर खाना (चूरमा, दाल व बाटी) तैयार किया गया। जिसमें खुलकर बातचीत हुई और एक प्रकार की नई उर्जा महसूस की गई।

3.2.25 अन्य संस्थाओं के साथ संवाद : दिगन्तर में शिक्षण विधा व दर्शन को जानने–समझने के लिए देशभर की विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं से शिक्षक, शिक्षाविद्, भावी शिक्षक–शिक्षिकाएं और इन्टर्नशिप हेतु छात्र व छात्राओं के समूह आते रहते हैं। लेकिन गत दो साल से ऐसे संस्थानों का स्कूल आकर समझना–सीखना एक तरह से रुक ही गया। लेकिन इस सत्र के अन्त में कुछ समूह विजिट हेतु आये और कुछ संस्थाओं के साथ ऑनलाइन विचार विमर्श किये गये, उनका विवरण इस प्रकार से है।

- 20 नवम्बर, 2021 को दिगन्तर विद्यालय, भावगढ में जयपुर से श्री अमित गुप्ता और उनकी पत्नी विजिट के लिए आये। उन्होंने स्कूल का अवलोकन किया। शिक्षण विधा और दर्शन पर बातचीत करने व समझने के बाद उन्होंने दिगन्तर विद्यालयों हेतु आर्थिक मदद का आश्वासन दिया।
- 19 फरवरी, 2022 को RMIT University Ausralia, School Of Planning Architecture, New Delhi से चार लोग रिसर्च हेतु दिगन्तर विद्यालय आये। इन्होंने विद्यालय अवलोकन किया, बच्चों के शिक्षण कार्य को समझा और इसके बाद शिक्षकों एवं समन्वयक समूह के साथ बातचीत की गई।
- 23 फरवरी, 2022 को FCRA से दो व्यक्ति दिगन्तर विद्यालय आये। जिन्होंने स्कूल का अवलोकन किया व इन्हें दिगन्तर की शिक्षण विधा के बारे में विस्तार से अवगत करवाया गया।
- 3 दिसम्बर, 2021 को उड़ान फाउण्डेशन से दो लोग आये। इन्होंने आने से पहले संस्था निदेशक और विद्यालय समन्वयक समूह से बातचीत करके दिगन्तर विद्यालय में अध्ययनरत 10 से 18 साल की कुल 100 लड़कियों के लिए आकार संस्था से मिले Nandi Sanitary Pads देकर गए।
- 8 दिसम्बर, 2021 को Tanaya Vyas, Ph.D StudentAt IIT Bombay के साथ बातचीत हुई। इस बातचीत में संस्था निदेशक व कार्यक्रम समन्वयक शामिल रहे। इस बातचीत में उनके शोध क्षेत्र Pedagogical Methods For Environmental Education पर बातचीत हुई, जिसमें दिगन्तर विद्यालयो में बच्चों के साथ काम के तरीके व सामग्री के बारे में समझा गया और 24 मार्च, 2022 को स्कूल अवलोकन किया और शिक्षकों व समन्वयक समूह के साथ बातचीत भी की।
- 28–29 मार्च, 2022 को United Way of Delhi से 8 लोगों का एक समूह दिगन्तर विद्यालय विजिट हेतु आये। इन्होंने 28 मार्च को विद्यालय अवलोकन किया और शिक्षकों से बातचीत की। दूसरे दिन 29 मार्च को समुदाय विजिट किये एवं समन्वयक समूह के साथ बातचीत की।
- Green Campus Workshop : 17 से 24 दिसम्बर, 2021 तक Climate Reality Green Campus Program के तहत आयोजित ऑनलाइन वर्कशॉप में दिगन्तर शिक्षक व समन्वयक शामिल रहे। यह वर्कशॉप प्रतिदिन लगभग एक घण्टे की हुई। वर्कशॉप में मुख्य रूप से निम्न घटकों पर व्याख्यान हुए, प्रस्तुतिकरण दिये गये और साझा बातचीत कर समझ बनाई गई।
  - Climate Change – Science, ImpactsAnd Solutions
  - Biodiversity – How can I improve it?
  - Water – ImpactsAnd Solutions
  - Waste – ImpactsAnd Solutions
  - Creating ofA kitchen garden
  - Air–AQI – ImpactsAnd Solutions
  - Energy – Know-how, Impacts and Solutions

- 20 दिसम्बर, 2021 को इकतारा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दो बिग बुक ''लाइटनिंग'' व ''हमारी दुनिया'' पर बच्चों के साथ इस्तेमाल का सीधा अनुभव लेने हेतु कमल किशोर शर्मा जो कि चाइल्ड फण्ड इण्डिया में कार्यरत हैं, दिगन्तर विद्यालय आये। इन्होंने 6 से 7 साल के बच्चों के साथ इन पुस्तकों पर कार्य किया और अपने इन अनुभवों को 23 दिसम्बर, 2021 को पराग द्वारा आयोजित हुई ऑनलाइन डिस्कशन पैनल में प्रस्तुत भी किया।

- Online Workshop On ACT Smart : 19 व 27 अगस्त, 2021 को ACT SMART Lnitiative Proposal For Collaboration Teenagers & YoungAdults Life Skills & Resilience के तहत एक कार्यशाला की गई, जिसमें दिगन्तर विद्यालय से कक्षा 9वीं व 10वीं के बच्चे एवं सभी शिक्षक शामिल रहे। इस कार्यशाला में मुख्य रूप से पीयर प्रेशर में आकर किस प्रकार से बच्चे गलत दिशा में चले जाते हैं, इसे एक छोटी–सी मूवी के माध्यम से समझाते हुये चर्चा की गई तथा समझा गया कि दोस्त व दोस्ती महत्वपूर्ण होने के साथ हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि हम किसी दवाब में न आकर अपने विवेक से सोच–समझकर ही निर्णय लें।
- 27 अगस्त, 2021 को EdIndia Foundation द्वारा सेवारत शिक्षकों हेतु ऑनलाइन सत्र रखा गया जिसमें ''शिक्षा के बदलते मुहावरे : 21वीं सदी की दक्षताएं'' विषय पर दिगन्तर सचिव रोहित धनकर द्वारा संवाद किया गया। जिसमें दिगन्तर के सभी शिक्षक व समन्वयक शामिल रहे।

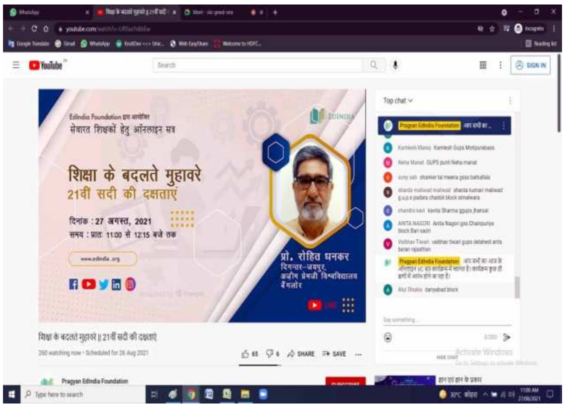

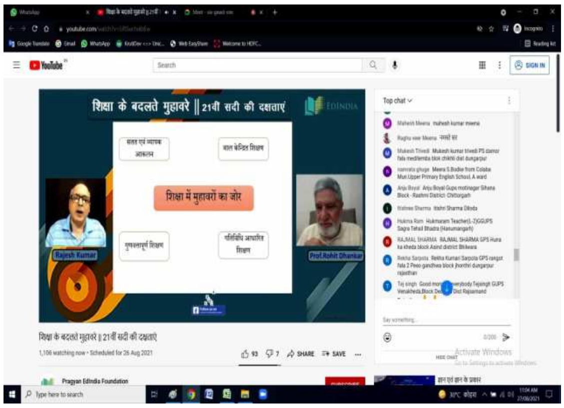

- NAS Exam Workshop : 11 सितम्बर, 2021 को नोडल NAS की कार्यशाला में दिगन्तर विद्यालय से कार्यक्रम समन्वयक उच्च माध्यमिक विद्यालय श्योपुर में आयोजित इस कार्यशाला में शामिल रहे। इस कार्यशाला में 12 नवम्बर को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय स्तर के एक सर्वे पर बातचीत की गई। यह सर्वे स्कूल स्तर पर कक्षा 3, 5, 8 व 10वीं के बच्चों के साथ एक परीक्षा के द्वारा किया जायेगा। इसके लिए जिन स्कूलों का चयन होगा उसी स्कूल के बच्चे इस सर्वे में शामिल रहेंगे।

✓ 27 अक्टूबर, 2021 को स्व. तालीम संस्था के साथ एक ऑनलाइन मीटिंग हुई। जिसमें मुख्य रूप से स्व. तालीम संस्था द्वारा उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर पर कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु दिगन्तर से सहयोग की बात रखी गई। इसमें मुख्य फोकस अंग्रेजी शिक्षण में बच्चों व शिक्षकों की स्थिति को कैसे बेहतर किया जा सकता है, इस पर रहा। लेकिन यह प्रशिक्षण विशेष कारणों से सम्पन्न नहीं हो पाया।

- "आशा फोर एज्यूकेशन" संस्था की ओर से वर्तमान में दिगन्तर विद्यालयों को सबसे ज्यादा आर्थिक सहयोग प्राप्त है। अतः संस्था द्वारा उन्हें नियमित रूप से प्रगति रपट भेजना और समय–समय पर अन्य कार्यक्रमों की जानकारी साझा करने के लिए उनके साथ संवाद जारी रहा।
- I. C. Trust व Savitri Puranmal Charitable Trust जो कि दिगन्तर स्कूलों में आंशिक वित्तीय सहयोग कर रही है, उनको प्रगति रिपोर्ट साझा करना और रपट भेजना संबंधित संवाद जारी रहा।
- 10 अगस्त, 2021 को Mental Health And Psycho – Social Counselling Support For Children in Rajasthan with RSCPCR के संयोजन से आयोजित Ummeed वेबीनार में दिगन्तर के सभी कार्मिक व माध्यमिक स्तर के बच्चे शामिल हुए। इस वेबिनार में कोविड–19 के समय बच्चों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करें एवं क्या–क्या गतिविधियां की जाए, इस पर एक प्रस्तुतिकरण हुआ एवं सवालों पर बातचीत की गई। साथ में बच्चों की मदद के लिए एक हैल्पलाइन नम्बर भी दिये गये जो मानसिक रूप से अस्वस्थ बच्चों की मदद के लिए कारगर है।

3.2.26 फण्डरेजिंग हेतु प्रयास :

- इस वित्तीय वर्ष में सहायक निदेशक व विद्यालय कार्यक्रम समन्वयक फण्डरेजिंग हेतु जयपुर स्थित कम्पनियों में CSR फण्डिंग के लिए बातचीत करने गए। इस प्रक्रिया में जयपुर के मालवीय नगर औद्योगिक क्षेत्र, सीतापुरा औधोगिक क्षेत्र, कूकस स्थिति औद्योगिक कम्पनियों व मोती सन्स ज्वैलर के यहां गए, उन्हें दिगन्तर विद्यालय का बजट व प्रपोजल दिया गया। लेकिन अभी इसमें किसी प्रकार की कोई सफलता नहीं मिल पाई है।
- कोटक महिन्द्रा बैंक के लिए समन्वयक समूह व निदेशक ने विद्यालय हेतु एक प्रोपोजल व उसके लिए बजट तैयार करके भेजा गया। लेकिन इस प्रोपोजल पर अभी तक कोई जवाब नहीं आया।
- Edelgive Grow Fund को प्रोपोजल तैयार करके भेजा गया, उसका भी कोई जवाब नहीं आया।
- राजकीय प्राथमिक विद्यालय कचहरेवाला, आमेर जयपुर में दिगन्तर द्वारा अकादमिक मदद हेतु एक प्रोजेक्ट का प्रस्ताव और उसके लिए बजट तैयार करके A & K को भेजा गया था। इस प्रस्ताव पर वैचारिक सहमति बन चुकी है, लेकिन एमओयू होना अभी बाकी है।

3.2.27 ऑनलाइन दस्तावेजीकरण

- 24 जुलाई, 2021 को राजस्थान प्राईवेट स्कूल पोर्टल पर एकीकृत मान्यता मॉड्यूल के तहत दोनों विद्यालयों की मान्यताओं की कॉपी, संस्था का पंजीयन, कार्यकारणी सदस्यों की सूची, संस्था का विद्यान और सचिव का एक शपथ पत्र आदि दस्तावेज पोर्टल पर अपलोड किये गये।
- BSER Portal : दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ को सितम्बर, 2017 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से माध्यमिक स्तर की अस्थायी सम्बद्धता मिली थी। अस्थायी सम्बद्धता मिलने के दो साल बाद स्थायी सम्बद्धता के लिए आवेदन करना होता है इसलिए स्थायी सम्बद्धता हेतु BSER Portal पर प्रपत्र भरकर स्थायी सम्बद्धता शूल्क 15000/- रुपये बैंक में चालान द्वारा जमा करवाया गया।
- दिगन्तर माध्यमिक विद्यालय भावगढ़ में बच्चों के 10वीं की वार्षिक परीक्षा हेतु BSER Portal पर विद्यालय प्रोफाईल भरकर वार्षिक सम्बद्धता शूल्क 2000/- रुपये बैंक चालान द्वारा जमा करवाये गये और बच्चों के 10वीं के वार्षिक परीक्षा हेतु आवेदन ऑनलाइन भरे गए।

- जो बच्चे इस बार 10वीं बोर्ड की परीक्षा दे रहे हैं, उनके सत्रांक BSER Portal पर Online भरकर Lock किया तथा BSER Portal से ही Lock Sessional Marks की कॉपी डाउनलोड की गई।
- Rajasthan Private School Portal (PSP Portal) पर निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत एंट्री कक्षा में प्रवेश हेतु दोनों विद्यालयों की प्रोफाईल भरकर RTE विज्ञप्ति तैयार की गई।
- National Scholarship Portal पर सत्र 2021–22 के लिए विद्यालय की प्रोफाईल को Update किए तथा जिन बच्चों ने स्कॉलरशिप के आवेदन किये हैं उनको Portal पर चैक कर Verified करने का काम किया। इस बार कुल 12 बच्चों के स्कॉलरशिप आवेदन Verified किये गये।
- Department of Science And Technology, Govt. of India के कार्यक्रम INSPIRE Awards - MANAK Scheme में दिगन्तर से 5 बच्चों का Registration किया गया तथा Science And Technology से संबंधित बच्चों के Ideaes को Upload किए।
- Swachh Vidyalaya Puraskar (SVP) 2021-22 (A National Mission) हेतु दिगन्तर विद्यालय का Registration कर विद्यालय स्वच्छता सर्वे फोरम भर कर फोटो अपलोड किये गये।

3.2.28 उपलब्धियां :

- **CCTV कैमरे एवं ग्रीन बोर्ड** : दिल्ली के आदित्य अग्रवाल जी से प्राप्त डोनेशन राशि 93000/- से दिगन्तर विद्यालय भावगढ में 16 CCTV कैमरे तथा 12 ग्रीन बोर्ड उपलब्ध हुये। ये सभी कैमरे समूह कक्ष, विज्ञान कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, हस्तकार्य कक्ष व कम्प्यूटर कक्ष में लगाये गये हैं एवं ग्रीन बोर्ड का उपयोग समूह कक्षों में किया जा रहा है।

- इस्माइल फाउण्डेशन द्वारा 1 लाख 20 हजार के वित्तीय सहयोग मिला, इस राशि से बच्चों के बैठने के लिए दरियां, शिक्षण कार्य में मदद हेतु एक प्रोजेक्टर व पुस्तकालय में शिक्षकों के लिए संदर्भ पुस्तकें एवं बच्चों के लिए कहानियां, कविताएं, नाटक, पहेलियां आदि पुस्तकें खरीदी गई।
- गत सत्र में लॉकडाउन के दौरान शिक्षकों ने बच्चों के लिए जो सामग्री तैयार की थी, उसका उपयोग इस सत्र में ऑनलाइन व ऑफलाइन शिक्षण में किया गया, यह काफी कारगर रही।

3.2.29 चुनौतियां या समस्याएं :

- कोविड–19 महामारी के कारण इस शैक्षणिक सत्र में ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों ही तरह से शिक्षण कार्य हुआ। लेकिन कोरोना की वजह से काफी बच्चे दोनों ही तरह के शिक्षण कार्य में नहीं जुड़ पाये। ऑनलाइन शिक्षण से बच्चों में सीखना उस स्तर का नहीं हो पाया, जिस स्तर से हम समूह में बच्चों के साथ कर पाते हैं अतः बच्चों का सीखना काफी प्रभावित रहा।

- अंग्रेजी शिक्षक के लिए अखबार में विज्ञप्ति के बाद साक्षात्कार लिया, लेकिन उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिल पाया, जिसके कारण उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण कार्य प्रभावित रहा।
- बच्चों को सीखने–सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली काफी गतिविधियां जो हर वर्ष विद्यालय स्तर पर आयोजित की जाती थी, वह इस बार महामारी के कारण संभव नहीं हो पाई। जिसके कारण बच्चों के शैक्षिक प्रगति में काफी नुकसान भी हुआ है।
- काफी समय से संस्था में वित्तीय संकट चल रहा है लेकिन इस सत्र में और अधिक प्रभावित हुआ क्योंकि कार्मिकों के लिए वेतन की राशि भी पर्याप्त न होने के कारण सभी कार्मिकों के वेतन से 15 से 35 प्रतिशत तक की कटौती हुई, जिससे सभी कार्मिकों का जीवन प्रभावित हुआ। अतः यह सत्र महामारी के साथ–साथ हमारे लिए आर्थिक रूप से भी काफी चुनौतीपूर्ण रहा।

3.2.30 विद्यालय की आगामी योजना व लक्ष्य :

- सरकारी गाइडलाइन के निर्देशानुसार महामारी से बचने के सुरक्षा उपायों सहित स्कूलों को आवश्यकता अनुसार ऑनलाइन और ऑफलाइन संचालन करना।
- नई शिक्षा नीति 2020 और राज्य सरकार के निर्देशानुसार विद्यालयों का संचालन करना।
- बच्चों के लिए बच्चों द्वारा तैयार द्वि–मासिक पत्रिका ''बातूनी'' का नियमित प्रकाशन करना।
- शिक्षकों की पत्रिका ''न्यूज लेटर'' का प्रकाशन करना।
- दिगन्तर विद्यालयों में आवश्यकतानुसार सम्पन्न परिवारों के बच्चों की बजाय जरूरतमंद परिवारों के बच्चों और उनमें से भी विशेषकर लड़कियों को नये प्रवेश में प्राथमिकता देना।
- अंग्रेजी विषय के लिए उपयुक्त शिक्षक की नियुक्ति कर उसका प्रशिक्षण करना।
- विद्यालय के विकास कार्यों के लिए प्रस्ताव तैयार कर आर्थिक सहयोग कर्ताओं को तलाशना।
- आगामी सत्र हेतु गतिविधियों का वार्षिक कलैण्डर तैयार कर उसके अनुसार कार्य करना।
- वार्षिक कलैण्डर अनुसार शिक्षकों का क्षमतावर्द्धन, कार्यशालाओं और बैठकों आयोजन करना।
- राष्ट्रीय उत्सव, प्रदर्शनी, बाल मेला, वार्षिक उत्सव आदि की तैयारी और आयोजन करना।
- वित्तीय स्थिति को बेहतर करने के लिए फण्डरेजिगं की नीति तैयार करना।

संदर्भ सहायता इकाई

हमारा मानना है कि किसी भी कार्यक्रम के सफल संचालन में उसके प्रशासनिक और व्यवस्थात्मक व्यवस्था का काफी महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए दिगन्तर में संचालित सभी कार्यक्रमों के सफल संचालन के लिए एक इकाई है, जिसे हम संदर्भ सहायता इकाई के नाम से पहचानते हैं। यह इकाई समस्त कार्यक्रमों को प्रशासनिक और व्यवस्थात्मक मदद मुहैया कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस इकाई के अन्तर्गत मुख्य रूप से निम्न युनिट काम करते हैं।

- लेखा एवं वित्तीय प्रबंधन
- स्टोर प्रबंधन
- पुस्तकालय संचालन
- कैम्पस सुरक्षा व मैस व्यवस्था

इस सत्र में उपरोक्त यूनिट में हुये क्रियाकलापों के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार से है :—

4.1 लेखा एवं वित्तीय प्रबंधन : इस सत्र में कोरोनाकाल के दौरान भी लेखा शाखा ने अपना कार्य नियमित और समय पर क्रियान्वित किया है। जिसमें संस्था के सभी प्रकार के आय—व्यय का हिसाब रखना है, संस्था की समय पर ऑडिट करवाना। संस्था एवं कार्मिकों का आयकर अधिनियमों के अनुसार टैक्स काटना और समय पर जमा करवाना। संस्था के कार्मिकों का नियमानुसर नियमित वेतन बनाना, समस्त आय—व्यय का रिकॉर्ड रखना और संस्था द्वारा आवश्यक पत्राचार करना इस शाखा के कार्यों में शामिल है। इसके अलावा संस्था को जो अनुदान देश या विदेश से प्राप्त होते हैं, उनकी रसीद बनाकर संबन्धित लोगों को भेजी गई। FCRA के संदर्भ में इस साल काफी कार्य हुये हैं, जिसमें भारत सरकार के नियमानुसार रिन्यू करवाने के लिए दस्तावेजों को ऑनलाइन अपलोड किया। सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने में इस शाखा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

4.2 स्टोर प्रबंधन : संदर्भ सहायता इकाई की एक दूसरी महत्वपूर्ण यूनिट सामग्री भण्डारण है। इस यूनिट द्वारा सभी कार्यक्रमों एवं अन्य संस्थाओं की आवश्यकताओं के लिए सामग्री प्रिन्ट करवाना, खरीददारों को भेजना, बाजार से नई सामग्री खरीदना और उनका अच्छी तरह से रख–रखाव करना आदि कार्य काम किये जाते हैं। इस सत्र में संस्थाओं की मांग के अनुसार प्रकाशन सामग्री को प्रिंट करवाकर भेजा गया और संस्था में समय–समय आवश्यक नई सामग्री की खरीददारी की गई। लगभग 15 संस्थाएं, जिसमें अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, उड़ान फाउण्डेशन, जतन संस्थान, स्मृति आदि ने कुल 90,368 रुपये की प्रकाशन सामग्री खरीदी है, जिसका समस्त लेखा–जोखा स्टोर प्रभारी द्वारा रखा गया। इसके अलावा आवश्यक स्टोक बनाये रखने के लिए 8 पुस्तकों की एक–एक हजार प्रतियां 87,500 रुपये की प्रिंट करवाई गई। इसके अलावा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्टोर की स्थाई सामग्री का भौतिक सत्यापन का कार्य भी किया गया।

4.3 पुस्तकालय संचालन : दिगन्तर में एक मुख्य पुस्तकालय है, उसके लिए किताबें खरीदना, रजिस्टर में इन्द्राज करना एवं कार्यकर्ताओं के लिए नियमित लेन–देन किया गया। पुस्तकालय प्रभारी द्वारा विद्यालय के अलावा इस पुस्तकालय को अन्य कार्यक्रमों में मदद हेतु नियमित रूप से आधे दिन के लिए खोला गया। सभी पुस्तकों के रख–रखाव को व्यस्थित रखा गया।

4.4 कैम्पस सुरक्षा व मैस : दिगन्तर का एक बड़ा–सा मुख्य कैम्पस है, जहां मैस की व्यवस्था है। मैस में तीन व्यक्ति कार्यरत हैं, जिनमें से एक कैम्पस प्रभारी हैं, जो कैम्पस की देखभाल के साथ मेहमानों के आवास, खाने की व्यवस्था और मैस में खाना भी बनाते हैं। इनके अलावा दो व्यक्ति मदद के लिए कार्यरत हैं। इस सत्र में पहले की तरह मेहमानों का आना नहीं हो पाया। लेकिन फिर भी संस्था के ही एक–दो व्यक्ति जो फाउण्डेशन ऑफ एज्यूकेशन कार्यक्रम से जुड़े हुए हैं, उन्हीं के लिए नियमित रूप से मैस का संचालन किया गया। इसके अलावा दोनों साथी कार्मिकों द्वारा कैम्पस में बागवानी, कार्यालय कार्यों में सहयोग, चौकीदारों की अनुपस्थिति में चौकीदारी का काम और पूरे कैम्पस की साफ–सफाई का कार्य भी किया गया।

- संदर्भ सहायता इकाई के कार्यों की बेहतरी के लिए इसकी सभी यूनिटों की साप्ताहिक बैठकें की जाती हैं, जिसमें कार्मिकों के अलावा संस्था निदेशक भी शामिल होती हैं। यह बैठकें इस इकाई के कार्यों को बेहतर दिशा देने के साथ सामुहिक कार्य करने को लेकर प्रेरित करती है। कोरोना के दौरान कुछ बैठकें तो ऑनलाइन हुई लेकिन अधिकतर बैठकें ऑफलाइन ही की गईं। इन बैठकों के मुख्य मुद्दे इस प्रकार से रहे।
  - कैम्पस के पेड़–पौधों की देखभाल और साफ–सफाई की व्यस्थित योजना व क्रियान्वयन।
  - स्टोर की सामग्री का रख–रखाव, खरीददारी व प्रकाशन सामग्री का प्रिंट व बेचान के संदर्भ में।
  - शिक्षा विमर्श का प्रकाशन, सदस्यता रिकॉर्ड और पत्र व्यवहार आदि को व्यवस्थित रखना।

- मुख्य कैम्पस स्थित पुस्तकालय की देखभाल व उसके संचालन की व्यवस्था।
- कैम्पस का मेन्टिनेंश, बिजली पानी की व्यवस्था, तार जाली आदि लगवाने के संदर्भ में बातचीत।
- इस बार मुख्य कैम्पस से पालतू डोगी ''पालो'' को जंगली बघेरा उठा ले जाने की दुःखद घटना भी घटी, जिसके बाद एक दूसरा नया डोगी लाये और उसके खाने–पीने की व्यवस्था की गई।
- दिगन्तर के सभी कार्यक्रमों में व्यवस्थात्मक मदद का स्वरूप तैयार कर क्रियान्वयन करना।
- लेखा शाखा से संबन्धित कार्यों का विश्लेषण व उन पर बातचीत की जाती रही हैं।

4.5 समस्या एवं चुनौतियां : वर्तमान में दिगन्तर को वित्तीय समस्याओं का काफी सामना करना पड़ रहा है। जिसमें सभी कार्मिकों के लिए पर्याप्त बजट न होने के कारण इस इकाई के सभी कार्मिकों के वेतन में कटौती की गई। इसके अलावा FCRA को रिन्यू करने की प्रक्रिया सतत रूप से जारी है। मुख्य रूप से देखा जाये तो इन समस्याओं के बावजूद अन्य कार्यक्रमों की सफलता के पीछे इस युनिट की महत्वपूर्ण उपयोगिता के आधार पर वित्तीय सहयोग के प्रयास कर रहे हैं लेकिन अभी तक हमें इसमें कोई खास सफलता नहीं मिल पाई है।

The Academic Resource Unit (TARU)

A brief description of activities of TARU during the financial year 2021-22 is as follows:

5.1 Training Programs

5.1.1 Foundations of Education Course (English): Pending Pedagogy Modules

The batch of Foundations of Education (hereinafter FoE) Course (English) was started in November 2020 and its 8 core modules got completed by the end of February 2021. However, the optional modules on Pedagogy of School Disciplines could not take place within the financial year of 2020-21. Therefore, during June and July 2021 these pending modules were organized in the following order:

i. **Pedagogy of Mathematics**: The transaction of this module took place in June 2021. The facilitator was Prof. Swati Sircar. Total 13 participants enrolled in this module. They were from different organizations like *IT for Change, MAARGA, Wipro partners such as Swataleem, Patang, Universe Simplified Foundation, Kshamatalaya Foundation, Self-Reliant India, Mil Ke Chalo Association, Shiksharth, Samerth Charitable Trust, Arth Transformational Services, etc*. A total of 5 sessions were organized in the module. The first session of 2 hours was held on Sunday in the morningand the rest four were held in the evening from 06:30pm to 08:00pm from Monday to Thursday. Each session was devoted to different fundamental concepts of Mathematics. The module focused on the foundational approach to teaching Mathematics - how to design learning materials based on the requirement of the concepts, how to design pedagogical decisions during classroom interactions, etc.

ii. **Pedagogy of EVS:**The module took place in June. The facilitator of the module was Dr. Kuldeep Garg. Total 13 participants enrolled in the module.Two sessions out of five were organized and got canceled due to the low attendance.

iii. **Pedagogy of English Language**: Thecourse took place in July. The facilitator of the module was Dr. Rajesh Kumar. There was a total of 32 participants – 11 teachers from Digantar school, 17 from FOE 1st batch English and 4 enrolled separatelywho were from Khemo Devi Public School & Narela Community Library, ARUN Rainbow Home, Universe Simplified Organization, Pragati Rural Development. The course focussed on the nature and pedagogy of the English language, its challenges, approaches, and assessment. This module was also offered as an Open Course and included participants other than the FoE.

5.1.2 Padhna-Likhna Course:

A New Open Course on Early Language Teaching

Two batches of Padhna-Likhna online courses were offered by the TARU team this year with the objectives:

- Know & understand the present challenges/issues of Teaching & Learning language in primary classes.
- Understand the nature of Language and its essential aspects in the context of Teaching & Learning : a). The relation between language and a child's understanding. b). The difference between the acquisition of spoken & written language.
- Identify the flaws of two approaches of teaching Language in their extreme form, which are – The whole Language Approach & the Phonics Approach.
- Know and practice a blended & flexible approach to Language teaching :– a). Activities for the development of spoken language b. the structured process of teaching reading and writing.

To fulfill the very objectives, a total of 16 handouts were made referring to Digantar'slanguage materials. Out of 16, 6 handouts dealt with the theoretical part named *vicharpatrak*, and 10 handouts named *vidhipatrak*comprised instructions of activities (with relevant content and examples) that were supposed to be done by the participants offline. Thus, the essential part of the course remained to prepare teaching-learning materials in

between the sessions. Detailed feedback was given to participants on their submitted tasks. The relevant issues/points, based on their tasks, were discussed in online sessions. The duration of the course was 7 weeks – one session of 2 hours every Sunday. Batch 1 started on 23rd May 2021 and ended on 27th June 2021. Batch 2 started on 18th July & ended on 12th September 2021.

In both the batches, participants' feedback was collected after every session and also at the end of the course. The feedback was taken on 10 simple questions, on a scale of 1 to 3. The general idea behind the scale was 1 for a minimum of quality or least appropriate, expressed in appropriate terms for the aspect of the course to which the questions were related.

Some details from both the batches, worth mentioning, are as follows:

Padhna-Likhna Batch 1	
Number of Participants	
Enrolled	53
Dropout	2
Remained	51
Attendance	82%
Feedback Given by (no & %)	37 (73%)

Padhna-Likhna Batch 2	
Number of Participants	
Enrolled	50
Dropout	0
Remained	50
Attendance	83%
Feedback Given by (no & %)	34 (68%)

Some other relevant details on participants' background, working areas, organizations, and the feedback questions can be seen in Appendix-1.

50% of participants, in both the batches, suggested increasing the duration of the course. There was a total of 13 offline tasks (preparing teaching-learning materials) in both batches which were compulsory. Course completion assignment was also there in both the batches which were optional. In batch 1, out of 53, 31 (58.5%) attempted offline tasks and 11 (20.8%) submitted their assignments. In batch 2, out of 50, 40 (80%) attempted offline tasks and 11 (22%) submitted their assignments.

At the end of both the batches, participants were given the certificates in two categories- Participation Certificate and Course Completion Certificate.

5.1.3 Foundations of Education (Hindi) Course :

Considering the demand from people from various organizations, it was decided that an online version of FoE in Hindi medium shall also be offered by TARU. Therefore, the brochure and the module descriptions (of all 8 core modules) were translated into Hindi. The first draftsof these translations were shared with the TARU team to get feedback. Members shared their feedback. Total 8 readings of four modules viz. Philosophy of Education, Introduction to Education, Pedagogy & Assessment and Teacher Education have been translated into Hindi. A consolidated list of available readings in Hindi got prepared and shared with the team. Initially, we thought of offering this course in December 2021. But WIPRO team has suggested conducting it in the next financial year because participants of WIPRO partners were occupied with other workshops at that timeand that would affect their participation in this course. However, due to other courses, the team could not offer the course in Hindi before December 2021 as it was decided earlier.

Later TARU team had meetings to discuss several things such as the need for revising the objectives of all modules, the need for revising the structure of the course, allocation of module-wise responsibilities, etc. Finally, it was decided that this time TARU team will offer the course with only 8 core modules and will not include pedagogy modules in the course. The 8 core modules are – Introduction to Education, Philosophy of Education, Sociology of Education, Perspectives on Learning, Pedagogy & Assessment, Teacher Education, and Action Research.

It was also discussed that the course could also be conducted face to face mode at Jaipur if conditions are favorable. Otherwise, the online mode will be preferred.

In the meeting held recently, we have decided that we will now do it online mode in June 2022. We will also be inviting external faculty for 2-3 modules. At present, the team is involved in translations of materials and revising the content, if necessary.

5.1.4 Bedrock Series :

TARU team has planned a 'Bedrock series' that encompasses three independent short but intensive courses. This year, the team got involved in preparing for the series. As per the plan participants will need to enroll in each course separately. Courses will be picked by the participants as per their choices and interest.These courses are being designed with a focus on developing a holistic understanding of three bedrock fundamental areas of educational

understanding and theorizing viz. Philosophy of Education, Perspectives on Learning, Sociology of Education. All the courses within this series will be conceived, developed, and transacted by the guest faculty, education practitioners, and academicians. Considering this in mind, the TARU team has approached two faculty members namely – Amman Madan & Rajashree from Azim Premji University along with Rohit Dhankar. Meanwhile, tentative content for Brochure & Flyer of this series was written by TARU team members and shared with faculty members for their suggestions.

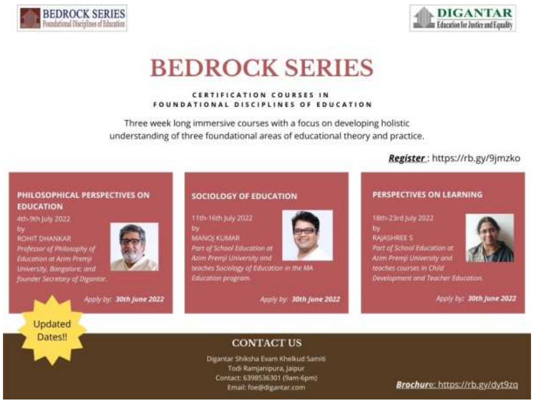

So far, one meeting with these faculty members has been organized. However, based on the suggestions from the WIPRO team, it was decided that the series should be offered in the next financial year – 2022-23. This update has been shared with faculty members. Now they are requested to give another date in the months starting from May. We have also proposed the option of conducting this series in offline mode. So far, Rajashree & Amman has shown the possibility of starting their courses from July 2022 in offline mode in Bangalore.

5.1.5 Thinking about Education (TAE) Course :

The first draft of the 'Thinking About Education' course was conceptualized in the earlier month of April 2021. The content for the TAE course was later built from June to July 2021. The work involved writing of initial content, topics of each module, writing content and making of a brochure and a flyer, etc. Later, the TARU team developed a compendium of each module along with session plans. The TAE course was announced in August 2021. The registration of the TAE course was started on the 1st August 2021 and the last date for registration was set to 31st August 2021. Total 40 participants were enrolled in the course from 27 different organizations -*IIT Jodhpur, Education Support, IGNOU, Centre for Creative Learning, Patang, Teach For India, Indian Institute of Management Ranchi, Stop Being Boring Club, Camp K12, Anand Niketan Bhadaj School, EdIndia, Haqdarshak, Wipro partners organizations such as rZamba, Kolorofeel Foundation, Afaaq Foundation, Unnati ISEC, Aavishkar Yatra, Milke Chalo Association, Sanjhi Sikhiya, Adhvan Foundation, Khamir, Prayog, Karunodaya Foundation, Let's Educate Children in Need, ELMS Sports Education, Sajag Trust, etc.*

The course started on 11th September 2021 and ended on 12th December 2021. The first session was a zero session. The agenda of the session was to make the participants familiarize with the course, Partners' Forum Portal, and other participants.

The TAE course was conceptualized to get the familiarity of the complex-intricate system of education to the participants.The course had six modules in it. A brief of modules is given below:

- M01 – The School Education Scenario
  (Total 6 hours: 4 hours online divided into 2 sessions + 2 hours self-study)
- M02 – Understanding the current policy discourse: NEP 2020
  (Total 8 hours: 4 hours online divided into 2 sessions + 4 hours self-study)
- M03 – Why are our students not learning?
  (Total 6 hours: 4 hours online divided into 2 sessions + 2 hours self-study)
- M04 – Educating a Human Being
  (Total 6 hours: 4 hours online divided into 2 sessions + 2 hours self-study)
- M05 – Aims and Content of Education
  (Total 10 hours: 6 hours online divided into 3 sessions + 4 hours self-study)
- M06 – Perils of remaining on the surface: Reflecting critically on the prevailing ambiguity in educational discourses and searching for some meaningful way outs
  (Total 4 hours: 2 hours online + 2 hours self-study)

All the sessions were held on Sunday from 09:30pm to 11:30pm (two weeks per module). The approach in the sessions was to present the topic and the basic understanding of the module with elaborated discussions with the participants. The discussion was a key aspect of each module. The discussion part was initiated with different modes like pre-offline work, pre-allocated readings (not more than 200-250 words), questions of the participants, etc. Readings were selected from NCF, RTE act, National Focus Group position paper, Gingell and Winch's Key Concepts of Philosophy of Education, Krishna Kumar's readings on education and reforms, NEP 2020, Rohit Dhankar's readings on reflective practices and assessment in education, Richard Rolt's Anything but human, Dearden's Form of understanding, etc. Padlet, an online platform, was used for sharing ideas and for further discussions.

The feedback of the participants was positive and critical. They have raised a few queries during the ongoing sessions, such as more discussion, suggestions for further readings, etc. Few participants showed their interest in attending more basic courses such as Philosophy of

Education, the implication of theory into practice, the relationship of curriculum and aims of education, tools to translate aims of education to pedagogy and curriculum, history of education, assessment in education, understanding human nature and education, etc. A few participants said that this course was too heavy for them considering it is a baseline course to venture into the field of education.

Two types of certificates were distributed among participants i.e., Certificate of Participation and Certificate of Completion. 37 Participants were enrolled for Certificate of Completion and 3 for Certificate of Participation. To receive the Certificate of Completion, participants had to complete offline tasks/ assignments/ handouts given during the module sessions.

5.2 Development of New Training Courses

5.2.1 Certificate Course on Early Mathematics Teaching

TARU team under the guidance of RohitDhankarhas developed a framework for an Arithmetic course. The course framework visualized a total of 14 sessions covering fundamental issues of mathematics concepts and their pedagogy. The courseframework intended to include a thorough discussion of current pedagogical approaches in Mathematics with critical lenses. The further development of framework and selection of materials is in process. TARU is planning to offer this course next year.

5.2.2 Certificate Course on Education Work

TARU team also worked on the development of another course framework - a certificate course on Education Work. This will be an intensive 7 units (tentative) blended course focusing on emerging professional needs (academic and ethical) of Education Workers (NGO Workers) necessary for them to contribute meaningfully in systemic transformation through various educational interventions. Education Work as an emerging professional domain goes beyond the teacher's professional development and pedagogical interventions. It encompasses strengthening and enabling the entire school education system to impart quality education. Therefore, it focuses on the entire system with its complexity and continuous interactions of multiple agencies and actors within it viz. government, NGOs, Funding agencies, Market, and so on. An education worker needs to understand this complexity as well as appropriate tools to deal with it during their interventional efforts. This course is a modest step in this direction and aims to help its participants to understand the distinct needs and tools of the education work.

5.2.3 Publication of Bi-monthly Magazine Shiksha Vimarsh

This year, the bi-monthly magazine Shiksha Vimarsh which used to be a separate project of Digantar was included in the annual activities of TARU. One of the TARU members Kuldeep Garg is editing this 23-year-old Hindi magazine now. Similarly, other TARU members have contributed to this by writing relevant articles during the year.

Two issues of Shiksha Vimarsh (Jan-Feb. and March-April 2021) were published. The third issue which is another special issue on Language Teaching (May-June 2021) is going to be published by the end of Feb. 2022. Four Special Issues were visualized viz. History of Education, Digital Education, Theatre in Education and Reopening the Schools. The team invited Sadan Jha, Gurumurthy, Abhishek Goswami, and Latika Gupta for them respectively. Out of these 4, 2 seem to be doing well (Digital Education and Reopening of Schools) and the articles for these issues are being collected. The editor contacted 160 authors who had been writing for the magazine in past and now regularly roping in new authors and scholars for Vimarsh. The team had also started digital dissemination for the published issue by developing short videos and circulating the same on social media viz. Facebook and LinkedIn. Now, the development of the proposal for funds for Shiksha Vimarsh is in process.

5.3 Interventional Programs

5.3. 1 Digantar-ITfC Joint Pilot Project on Foundational Literacy and Numeracy

This year, TARU has conceptualized and developed a pilot project on the training of primary teachers in foundational literacy and numeracy and sent it to a few funding agencies seeking financial support for the same. ITfC accepted the proposal and funded the project. This pilot project intends to i). develop and offer courses on foundational literacy and numeracy based on experiences of Digantar and its time-tested packages in early language and mathematics in online and face-to-face mode to the selected 200 government teachers of Rajasthan; and ii). study of their efficacy in terms of academic quality as well as the suitability of their modes and to recommend a plausible model for the same for future programs.

As the first step of the project, the application was submitted to the government and 12 follow-up visits and meetings with government officials were made and held respectively. The documents that were neededwere developed viz Project Proposal for ITfC, MoU with ITfC,Proposalfor Govt, Cover Letter, and PPT Presentation, etc. Plan and strategy were developed. An appointment of a consultant was made. Along with the development of the

presentation for the course, a course plan/structure on Language & Mathematics was developed. About four meetings with the team of IT for Change were also held so far. Development of Mathematics course is in the process whereas the already existing padhna-likhna course is being modified considering needs and objectives of the proposed training program.

5.3.2 Fundraising Efforts

Fundraising efforts made by TARU can be divided into two parts:

i). Open Grant/Funds:

Under this category, TARU developed and sent its proposals to HCL, Edelgive Grow Fund, and Kotak Mahindra Bank CSR.

ii). CSR Funds:

For CSR funds, the TARU team has collected relevant data of CSR funds, especially of the organizations which are working in Rajasthan as well as local firms located in Jaipur. The team further developed the proposal and budgets and started submitting the proposals (Local and External agencies). This work is being still undertaken and about 15 CSR agencies have been visited so far to submit proposals seeking financial support for Digantar Vidyalaya in Jaipur.

5.3.3 Other Engagements

1. Grading of remaining assignments in two core modules of FOE (1^{st} batch in English) was done.
2. After both the batches of Padhna-Likhna, all the readings, handouts, and recordings of sessions of the course, were uploaded on moodle. For this, necessary sections were created on moodle.
3. In 6 months, 15 meetings were organized that comprised TARU meeting, meeting with WIPRO, and meeting with the team of IT for change.
4. TARU members also made a monthly plan and reviewed the same for every month.
5. TRSU meetings were organized regularly.
6. TARU's bi-monthly work reports were prepared regularly and sent to the concerned person.
7. Bi-monthly Project Coordinators Meeting (PCM) were organized regularly.

8. One member is teaching English in 10th standard in Digantar Vidyalaya since August. This is also allowing understanding students' problems and their needs along with the sense of functioning of school by taking part in weekly meetings from October.
9. TARU's annual plan was developed and sent to WIPRO.
10. Documents for Due Diligence were developed.

***

Appendix-1: Padhna-Likhna Course

Table-1: Qualification, Experience & Nature of current profession of participants

Batch 1			
Educational Qualification	**Professional Qualification**	**Experience in Education**	**Nature of current Profession**
M.Phil 1 (1.9%)	M.Ed. 1 (1.9%)	20+ Years 2 (3.8%)	Teaching/Lecturer 6 (11.3%)
Masters 34 (64.2%)	B.Ed. 7 (13.2%)	15+ Years 5 (9.4%)	Teacher Support/Guide 13 (24.5%)
Graduates 12 (22.6%)	D.EL.ED 1 (1.9%)	10+ Years 6 (11.3%)	Program Manager 19 (35.8%)
12th 2 (3.8%)	None 44 (83.0%)	5+ Years 11 (20.8%)	Student/Scholar 3 (5.7%)
Not known 4 (7.6%)		Less than 5 Years 24 (45.3%)	Co-founder 4 (7.5%)
		Not known/NIL 5 (9.4)	Academic head 2 (3.8%)
			Content Developer 2 (3.8%)
			Not known 4 (7.6%)
Batch 2			
M.Phil 1 (2.4%)	B.Ed. 7 (17.1%)	20+ Years 3 (7.3%)	Teaching 9 (22%)
Masters 31 (75.6%)	B.El.Ed. 1 (.42%)	15+ Years 7 (17.1%)	Teacher Support/Guide 26 (63.4%)
Graduates 9 (22%)	None 33 (80.5%)	10+ Years 10 (24.4%)	Manager 2 (4.9%)
		5+ Years 10 (24.4%)	Student 1 (2.4%)
		Less than 5 Years 10 (24.4%)	Not known 3 (7.3%)
		NIL 1 (2.4%)	
*This calculation of batch 2 does not include the data of 9 teachers who joined from Digantar school.			

Table-2: Sponsoring Organizations

S.N.	Batch 1 : Organization, if any	Number
1	WIPRO Partner Organizations – Room to Read India Trust, Piramal Foundation, Swadhar IDWC (Pune), Patang, Shiksharth, Unnati Institute for Social & Education Change, SwaTaleem Foundation, Self-Reliant India, Khamtalaya Foundation, Awadh People's Forum. Babu Kamta Prasad Jain Mahavidyalaya	14
2	Samerth Charitable Trust	13
3	Not Working	6
4	CINI – An Initiative of Tata Trust	5
5	CSPC	5
6	IIT Gandhinagar	1
7	Tata Trust, DI, Bahraich	1
8	Education Department, Haryana	1
9	Language and Learning Foundation	1
10	Azim Premji Foundation	1
11	IIT Jodhpur	1
12	Prakriti School	1
13	Umang School	1
14	Education Support Organization (Gyan Shala)	1
15	Success International School	1
S.N.	**Batch 2 : Organization, if any**	**Number**
1	Language and Learning Foundation	18
2	Digantar School	9
3	Disha India Education Trust	4
4	Foundation for Innovation and Research in Education	4
5	Rainbow Foundation India	4
6	Not Known/Not Working	4
7	Bhasha Research and Publication Center	2
8	Association of Rural and Urban Needy	1
9	Government Primary School Kashipur, Sonipat, Haryana	1
10	Independent Education Consultant	1
11	Krishnamurti School, Bagusarai, Bihar	1
12	Kamodaya Foundation	1

Table-3: Questions given on feedback form and the data on participants' assessment of the quality or appropriateness regarding each question.

S.N.	Questions	Qs in short	Participants' Rating (Batch 1 & 2)		
			High	Satisfactory	Low
1	How well could you understand the sessions?	Understanding	91.9	8.1	-
2	How useful do you consider the course?	Usefulness	91.9	8.1	-
3	How much of the course content was new for you?	New learning	70.3	27.0	2.70
4	How many opportunities were available for asking questions?	Opportunities of Questions	81.1	18.9	-
5	How clear and relevant were the answers?	Clarity & relevance of answers	62.2	37.8	-
6	How difficult was the language of handouts?	Easy Language (handouts)	51.4	37.8	-
7	How clear were the instructions given for activities?	Clarity of Instructions	64.9	35.1	-
8	Can the activities you did in the course be used with children in the class?	The usefulness of activities in class	97.3	2.7	-
9	The feedback given on your submitted work was satisfactory?	Satisfaction on Feedback	48.7	51.4	-

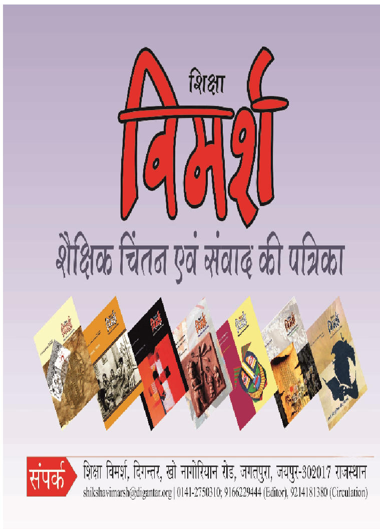

''शिक्षा विमर्श''

(शैक्षिक चिंतन एवं संवाद की पत्रिका)

पृष्ठभूमि

दिगन्तर ने 1990 के दशक में लगभग एक दशक तक प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में वैकल्पिक तरीके से स्कूल चलाने के दौरान अनुभव किया कि देश में बड़ी संख्या में हिंदी बोलने वाले लोगों के बावजूद हिंदी में अच्छे शैक्षिक साहित्य और पत्रिकाओं की कमी है। इस रिक्तता को भरने और शैक्षिक संवाद शुरू करने के लिए शिक्षा विमर्श को प्रकाशित करने का विचार अस्तित्व में आया।

मार्च 1998 में शिक्षा विमर्श का प्रकाशन करना शुरू किया। उस वक्त भारतीय शिक्षा प्रणाली में तेजी से बदलाव हो रहे थे। सरकारी और गैर–सरकारी संगठन हर बच्चे तक पहुंचने और उन्हें शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए प्रयास कर रहे थे। इस उद्देश्य के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा कई प्रकार के स्कूल स्थापित किए गए थे। इस अवधि के दौरान पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षाशास्त्र, शिक्षकों के ज्ञान और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न मुद्दों पर कई महत्वपूर्ण सवाल उठाए जा रहे थे।

प्रारम्भ में दो वर्षों के लिए यह पत्रिका मासिक आधार पर प्रकाशित की गई थी, लेकिन 2001 के बाद से इसे द्वि–मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाता रहा है। वित्तीय सहायता के संदर्भ में कई उतार–चढ़ाव के बावजूद 23 वर्षों की अवधि के दौरान शिक्षा विमर्श का प्रकाशन जारी है। शिक्षा विमर्श ने 15 विशेषांकों सहित अब तक कुल 121 अंक प्रकशित हो चुके हैं।

शिक्षा विमर्श का प्रकाशन इस धारणा पर आधारित है कि शिक्षा न तो केवल सिद्धांत पर आधारित हो सकती है और न ही कर्म (शैक्षिक अभ्यास)। शिक्षा के क्षेत्र में सिद्धांत और अभ्यास के बीच निरंतर संवाद की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है कि शिक्षा में सिद्धांत और जमीनी अनुभवों के बीच संश्लेषण को स्थापित करने की आवश्यकता है। शिक्षा विमर्श ने पिछले 23 वर्षों के दौरान हिंदी में गंभीर शैक्षिक साहित्य का संकलन किया है। इसने शैक्षिक नीतियों, पाठ्यक्रम सिद्धांतों, शिक्षाशास्त्र पर महत्वपूर्ण साहित्य का प्रकाशन किया है और पाठकों के साथ जमीनी अनुभव भी साझा किए हैं।

शिक्षा विमर्श से नये–पुराने लेखकों को जोड़ने का प्रयास : इस वर्ष हमने कुल 160 नये–पुराने लेखकों को शिक्षा विमर्श में लेखन के लिए जोड़ने हेतु अलग–अलग ईमेल किया। जिसका परिणाम यह रहा कि उसके तुरन्त बाद कुछ लेखकों ने लिखने का आश्वासन भी दिया है, जो आगामी अंकों में काम आएंगे।

6.1 पत्रिका की पहुंच और फोकस

शिक्षा विमर्श के पाठकों में शिक्षक, शिक्षक–शिक्षा से जुड़े लोग, शैक्षिक कार्यकताओं के अलावा देशभर से सरकारी, गैर–सरकारी शैक्षणिक संस्थान और शोधार्थी शामिल हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का उपयोग सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षणों, सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों और कार्यशालाओं में लगातार किया जाता रहा है। शिक्षा विमर्श में प्रकाशित लेखों का उपयोग शिक्षकों और छात्रों द्वारा हिंदी भाषी क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में भी किया जाता रहा है।

पत्रिका का एक प्रमुख योगदान यह भी है कि अनुवाद के माध्यम से भी हिंदी में नवीनतम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित शैक्षिक आलेख पाठकों को उपलब्ध करवाती रही है।

6.2 प्रसार और सदस्यता

शिक्षा विमर्श का विभिन्न फंडिंग संगठनों के आर्थिक सहयोग से प्रकाशन होता रहा है। लेकिन अप्रैल 2018 के बाद से कोई वित्तीय सहयोग नहीं मिला, लेकिन अर्थिक संकटों के बावजूद प्रकाशन जारी रखा। दिगन्तर शिक्षा विमर्श के लिए आर्थिक सहयोग जुटाने हेतु निरंतर प्रयासरत है। वर्ष 2015 से शिक्षा विमर्श ने अपने लिए धन जुटाने के लिए पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करना भी शुरू किया है। मई–जून, 2019 अंक के बाद पूर्णकालिक संपादक का पद भी रिक्त है। इसलिए पत्रिका का प्रकाशन गम्भीर रूप से बाधित हुआ है।

महामारी के कारण पत्रिका में आठ अंकों का ब्रेक हुआ और उसके बाद पत्रिका से जुड़े अंशकालीन संपादक के प्रयासों से इस वर्ष कुल छः अंकों के बजाय मात्र एक विशेषांक "**उभरते सामयिक संदर्भों में नई तालीम**" मार्च–अप्रैल, 2021 का ही प्रकाशन हो पाया है।

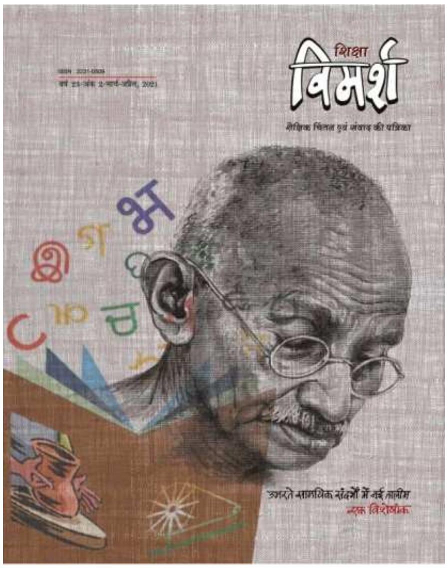

मार्च–अप्रैल, 2021

इस वित्तीय वर्ष के दौरान प्रसार और सदस्यता की स्थिति निम्नानुसार है –

प्रकाशित अंक (माहवार)	बन्द[1] सदस्य	रिन्यू/पुनःशुरू[2] सदस्य (±)	नये जुड़े सदस्य	पाठक प्रतियां	APF को भेजी प्रतियां	कुल[3] भेजी प्रतियां
मार्च–अप्रैल, 2021	78	40	20	466	565	**1031**
मई–अगस्त, 2021 (संयुक्तांक)	भाषा शिक्षण पर केन्द्रित विशेषांक प्रकाशन की प्रक्रिया में है...					------

1 *जो लंबे समय से नवीनीकृत नहीं हुई हैं, उन्हें प्रकाशन पुनः आरम्भ की सूचना देने के बाद बन्द किया गया है।*

2 *नियमित नवीनीकरण और पुनः शुरू की सदस्यता को फिर से शुरू करने वाले सदस्य।*

3 *इस अंक के पाठकों को भेजी गई और बिक्री की गई कुल प्रतियों की संख्या।*

वर्ष 2021–22 के दौरान शिक्षा विमर्श का मात्र एक विशेषांक प्रकाशित हुआ है। इस वित्तीय वर्ष के दौरान, पत्रिका ने कुल **1,41,238** रुपये की राशि सदस्यता, नवीनीकरण और अंक बेचकर प्राप्त की है। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन ने इस बार मार्च–अप्रैल, 2021 अंक की 565 प्रतियां खरीदी हैं। इसके अलावा पत्रिका के पुराने संस्करणों का भी बेचान किया गया है।

6.3 विशेषांकों का प्रकाशन

हमने इस वित्तीय वर्ष (2021–22) में 5 विशेषांक कल्पित किए थे, जिन्हें योग्य अतिथि संपादकों के नेतृत्व में प्रकाशित किया जाना था :

1. उभरते सामयिक संदर्भों में नई तालीम (पल्लवी वर्मा पाटिल)
2. भाषा शिक्षण पर केन्द्रित विशेषांक (कुलदीप गर्ग)
3. शिक्षा का इतिहास (सदन झा)
4. शिक्षा में थिएटर (अभिषेक, मोअज्जम, सुभाष)
5. डिजिटल शिक्षा (गुरुमूर्ति कासीनाथन, यह अंग्रेजी में सॉफ्टकॉपी में भी प्रकाशित होगा।
6. स्कूलों का दुबारा खुलना (लतिका गुप्ता)।

उपरोक्त में से अभी तक क्र.सं.–1 प्रकाशित हो चुका है, क्र.सं. 2, 5 और 6 पर काम चल रहा है और 3 और 4 पर इनके अतिथि संपादकों की अकादमिक व्यवस्तताओं के चलते काम नहीं हो सका।

क्र.सं.–2 विशेषांक प्रकाशन की अंतिम प्रक्रिया में है और आने वाले तीन विशेषांकों पर हम एक स्तर तक काम आगे बढ़ा पाए हैं। इन विशेषांकों के अलावा हमने एक सामान्य अंक की परिकल्पना भी की थी, जिसकी अधिकांश सामग्री हो चुकी है। उपरोक्त अंकों की संक्षिप्त प्रगति रिपोर्ट निम्नानुसार है :–

1. **उभरते सामयिक संदर्भों में नई तालीम : एक विशेषांक (पल्लवी वर्मा पाटिल के नेतृत्व में)** : यह विशेषांक अक्टूबर, 2021 में आ चुका है, जिसमें कुल 13 आलेख प्रकाशित हुए हैं।
2. **भाषा शिक्षण पर केन्द्रित विशेषांक (कुलदीप गर्ग)** : यह विशेषांक लगभग तैयार है और प्रकाशन की अंतिम प्रक्रिया में चल रहा है। इसमें कुल 13 आलेख प्रकाशित होंगे।

3. **डिजिटल शिक्षा पर केन्द्रित विशेषांक (गुरुमूर्ति कासीनाथन के नेतृत्व में):** यह विशेषांक हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में आएगा। अंग्रेजी भाषा में सॉफ्ट फॉर्मेट में और हिंदी में परम्परागत तरीके से हार्ड और सॉफ्ट दोनों फॉर्मेट में प्रकाशित किया जाएगा। इस अंक की कार्य प्रगति निम्न है:

अ) इस विशेषांक में कुल 14 आलेख होंगे, जिनमें से 8 का हिन्दी अनुवाद हो चुका है और अभी 6 आलेख हिन्दी अनुवाद की प्रक्रिया में हैं।

ब) उल्लेखनीय है कि इस विशेषांक के लिए प्राप्त लेखों के लिए लेखकों को मानदेय ITfC द्वारा दिया जाने की सहमति भी बनी है।

4. **स्कूलों का दुबारा खुलना पर केन्द्रित विशेषांक (लतिका गुप्ता जी के नेतृत्व में)** : इस विशेषांक के लिए कुल 23 लेखकों को आमंत्रित किया गया था। जिनमें से अभी तक कुल 5 लेख प्राप्त हुए हैं। बाकी पर लतिका जी द्वारा काम किया जा रहा है।

5. **एक सामान्य अंक की सामग्री** : इस अंक के लिए कुल मिलाकर अभी तक 5 आलेख और एक ऑडियो रिकॉर्डिंग इंटरव्यू आ चुके हैं। इस हिसाब से एक आलेख और एक संपादकीय की मदद से इस अंक की सामग्री तैयार है।

6.4 अतिरिक्त कार्य

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि इस वर्ष शिक्षा विमर्श का मात्र एक विशेषांक ही प्रकाशित हुआ है और दूसरे विशेषांक की सामग्री प्रकाशन के लिए लगभग तैयार हो गई है। इसके अलावा इस वर्ष शिक्षा विमर्श की टीम (एक मात्र प्रसार व प्रकाशन प्रबंधक) द्वारा दिगन्तर के अन्य कायक्रमों में अलग–अलग तरह से कार्य कर सहयोग किया गया –

1. दिगन्तर स्कूल द्वारा प्रकाशित बच्चों की पत्रिका बातूनी के दो अंक (124 व 125) की डिजाइन तैयार की गई।
2. दिगन्तर वार्षिक रिपोर्ट 2020–21 की फोरमेटिंग, प्रूफ रीडिंग के साथ कवर पेज डिजाइन करने का काम किया और उसके बाद मिले सुझावों को शामिल करते हुए रिपोर्ट को फाइनल किया।
3. दो–तीन बार दिगन्तर की मासिक कार्य रिपोर्ट तैयार करने का काम किया गया।
4. दिगन्तर विद्यालय शिक्षकों द्वारा कार्यशाला में लिए गए अनुभवों की एक पुस्तक को तैयार किया, जिसमें फोरमेटिंग, प्रूफ और कवर तैयार करने के बाद कुल 84 पेज की पुस्तक तैयार किया।
5. दिगन्तर विद्यालय में कोविड वैक्सिनेशन कैम्प हेतु पैम्पलेट डिजाइन करने का काम किया।
6. दिगन्तर विद्यालय के शिक्षकों द्वारा संकलित व टाइप खेल गतिविधियों से कम्प्यूटर में एक 55 पेज की पुस्तक तैयार किया, जिसमें एडिटिंग, प्रूफ रीडिंग और फोरमेटिंग का काम किया गया।
7. दिगन्तर विद्यालय के शिक्षकों द्वारा जून, 2021 की क्षमतावर्धन कार्यशाला में निर्मित कविताओं को एक 24 पेज की पुस्तक की फोरमेटिंग, प्रूफ रीडिंग और कवर के साथ तैयार किया।

8. दिगन्तर संस्था की नई कार्यकारिणी को राजस्थान सरकार के राज सहकार पोर्टल पर अपडेट करवाने के लिए कई बार दस्तावेज अपलोड किए गए और तीन बार उनके कार्यालय भी गए।

9. दिगन्तर फाउण्डेशन कार्यक्रम के तहत संचालित कुल पाँच निम्न कार्यक्रमों के लिए कुल 44+15+49+49=157 सर्टिफिकेट कोरलड्रॉ में डिजाइन, एडिटिंग और फाइनल तैयार किया।

1.	Foundation of Education Course in English	: 44 Certificates
2.	English Language Teaching	: 15 Certificates
3.	Thinking About Education	: 40 Certificates
4.	पढ़ना–लिखना कोर्स–I	: 49 Certificates
5.	पढ़ना लिखना कोर्स–II	: 49 Certificates

10. दिगन्तर कार्यलय में आवश्यकतानुसार नियमित रूप से कम्प्यूटर द्वारा पत्र, नोटिस, सूचना, फोरमेट आदि तैयार किये गये और कार्यालय में आने वाले टेलिफोन के जवाब दिया गया।

11. उपरोक्त कार्य के साथ–साथ शिक्षा विमर्श के वर्तमान पाठकों, नये संभावित पाठकों की ओर से आने वाली जानकारी कॉल, ईमेल, सदस्यता नवीनकरण, पुराने अंक और लेख भेजने आदि नियमित तौर पर किया गया।

6.5 शिक्षा विमर्श की चुनौतियां

- शिक्षा विमर्श को अप्रैल 2018 के बाद से कोई वित्तीय सहायता नहीं मिली, जिसके कारण पत्रिका का प्रकाशन करने में आर्थिक संकट आज भी बरकरार है।

- पत्रिका प्रकाशन में नियमितता अभी तक एक महत्वपूर्ण चुनौती रही है। नए आलेखों की आमद, लेखकों द्वारा निरंतर लेखन, नए लेखकों का जुड़ना और पत्रिका टीम की अन्य आंतरिक जिम्मेदारियां आदि पर नए सिरे से काम करने की कोशिश की गई है। आशा है कि इनके कुछ सकारात्मक परिणाम निकलेंगे।

शिक्षा विमर्श
दिगन्तर, टोडी रमजानीपुरा
खोनागोरियान रोड, जगतपुरा,
जयपुर–302017 राज.। संपर्क : 0141–2750310
मो. : 9214181380 (प्रसार व प्रकाशन प्रबंधन)
ईमेल : shikshavimarsh@digantar.org
वेब साईट : www.digantar.org

मार्ग दर्शक कौन ?

किसी चीज़ पर इसलिए
विश्वास मत करो
कि तुम्हें वैसा बताया गया है
या कि परम्परा से वैसा होता आया है
अथवा स्वयं तुमने उसकी कल्पना की है
तुम्हारा शिक्षक जो कहता है उस पर महज इसलिए
विश्वास मत करो
कि तुम उसका आदर करते हो
किन्तु उचित परीक्षण और विश्लेषण के बाद तुम्हें
कल्याणकारी लगे, सर्व हितकारी लगे
उसी सिद्धान्त पर विश्वास करो उस पर अडिग रहो
और
उसे अपना मार्ग दर्शक मानो

– बुद्ध

संपर्क

दिगन्तर
शिक्षा एवं खेलकूद समिति
टोडी रमजानीपुरा, खोह नागोरियान रोड
जगतपुरा, जयपुर–302017 राजस्थान